31-78

मुख पृष्ठ पर

रूठ कर जब से गये तुम
भूल ही हमको गये तुम,
चैन करते हो वहाँ तुम
अक्ल अपनी है यहाँ गुम।
जी नहीं लगता हमारा
ध्यान रहता है तुम्हारा,
अब चले आओ डियर तुम,
थाम कर दामन हमारा॥

अंक : ३१, २१ सितम्बर से २७ सितम्बर १६७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

सुनहरी लाल गोयल, पीलीभीत

प्र० : एक ओर फूट पड़ रही है दूसरी ओर मेल-मिलाप की कोशिशें हैं, इस राजनीति का अंजाम ?

उ० : अंतर कुछ पड़ता नहीं, हो मिलाप या फूट।
सदा-सदा चालू रहे, राजनीति में लूट ॥

सुरेन्द्र प्रजापत 'राही', लालगढ़ (बीकानेर)

प्र० : काका जी, दिल लगता है, या लगाया जाता है ?

उ० : ठोकपीट कर लगाया, फिर भी नहीं लग पाय।
दिल लगना उसको कहें, जो खुद ही लग जाय ॥

धीरेन्द्र कुमार, शुक्ला, कानपुर

प्र० : काका के नाम से कविता आप ही लिखते हैं, इसका सबूत ?

उ० : ऐसा मूरख कौन है, जो यह खतरा लेय।
कविता लिक्खे खुद मगर, नाम हमारा देय ॥

सुनील कुमार, सिंह, चास (धनबाद)

प्र० : लड़की अंगूर है तो लड़का ?

उ० : यह बचकाना प्रश्न है, उत्तर दंय जरूर।
लड़का समझो मुनक्का, लड़की यदि अंगूर ॥

मोहित कुमार जैन, दिल्ली-६

प्र० : काका जी, आप हमारी तरफ नजर क्यों नहीं मिलाते ?

उ० : नजर लगेगी आपको, यह कारण है फैक्ट।
नजर नहीं हम मिलाते, इसीलिए डाइरैक्ट ॥

इन्द्रपाल सिंह भाटिया, चण्डीगढ़

प्र० : देश में भिखारी बढ़ रहे हैं, या घट रहे हैं ?

उ० : शिक्षा मंत्री की तरह भिक्षा मंत्री आय,
घटा-बढ़ी के आंकड़े, वो ही ठीक बताय।

मुरारी लाल जोगी, सुजानगढ़ (चूरू)

प्र० : प्यार की परीक्षा में पास होने की तरकीब बताइए।

उ० : किसी पार्क में करें जब, प्रेमी हास-विलास,
नक्ल करो हो जाउगे, प्रेम-क्लास में पास।

वासुदेव प्रेमी, दुलियाजान, (आसाम)

प्र० : आपकी दाढ़ी के कुछ बाल, मैं अपने म्यूजियम में रखना चाहता हूं।

उ० : पता नहीं कुछ आपकी कितनी इज्जत-साख।
एक बाल का मूल्य है, रुपये ढाई लाख।

डी० के० मटाई, नन्दलालपुरा, इन्दौर (म० प्र०)

प्र० : काका जी, आपने कितनी लड़कियों को अपने फंसाया है ?

उ० : कलियुग वाली काकियां, .तीं बहुत विचित्र।
हम खुद उनके जाल में, फंसे पड़े हैं मित्र।

विजय कुमार, श्रीगंगानगर (राज०)

प्र० : कुछ लड़कियां मटक-मटक कर क्यों चलती हैं काक

उ० : नहीं छु ए छूटे बाबू, आदत जैसी पड़गी,
उछल-उछल कर लड़के चलते, मटक-मटक कर ल

रामदेव मुंडा, बेरमो (बिहार)

प्र० : इन्सान झूठ का सहारा कब लेता है ?

उ० : सत्य बोलने पर नहीं, छुट्टी देता बॉस।
झूठी अर्जी भेज दो, हो जाएगी पास।

राजेश भूटानी, रिवाड़ी

प्र० : सोने की अंगूठी में हीरे चमक रहे हैं।
काका तुम्हारी याद में आंसू टपक रहे हैं।

उ० : 'दीवाना' के सहारे दीवाने फंसाते हैं।
आंसू से हमको नफरत, रोतों को हंसाते हैं।

आलोक जेतली, सिविल लाइन (कानपुर)

प्र० : आदमी कार्य से प्रसिद्ध होता है, अथवा प्रसिद्धि सफल होता है ?

उ० : जनगण-हित के कार्य से, हो इन्सान प्रसिद्ध।
जब प्रसिद्धि मिल जाए तो, कार्य होयँ सब सिद्ध।

अमर कुमार श्रेष्ठ 'मंजु', फतेहपुर (नेपाल)

प्र० : बूर (भूसी) के लड्डू खाए सो पछताए, न खाए सो ऐसा क्यों ?

उ० : मंत्रीपद भी बूर के लड्डू माने जायें।
भूतपूर्व पछता रहे, वर्तमान ललचायें।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

टैस्ट ट्यूब का कमाल

समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि वैज्ञानिकों ने टेस्ट-
में मानव भ्रूण का विकास कर सफलतापूर्वक प्रति-
कर दिया और प्रथम टेस्ट ट्यूब बेबी पैदा भी हो
है। आने वाले वर्षों में और क्या-क्या होगा ?

पहलवान यूं ललकारेगा, 'है कोई टेस्ट ट्यूब का लाल जो मेरा मुकाबला करेगा ?'

कव्वाल लोग टेस्ट ट्यूबों पर कव्वालियां गायेंगे। 'आज टैस्ट ट्यूब के स्टैण्ड के पास सजदा करेंगे हम, सजदा करेंगे सजदा करेंगे सजदा करेंगे हम'।

के स्थान पर परीक्षा के समय डाक्टर विद्यार्थियों
गोरी सैलों में से एक सेल ले जाकर टेस्ट करके
लगायेगा कि आपको कोर्स की पढ़ाई का कितना
त याद है। नकल करने का मौका नहीं मिलेगा।

प्यार भी टेस्ट ट्यूबों में उपलब्ध होगा। टेस्ट ट्यूब को देख आहें भरिये, फिकरे कसिये और कविता कीजिये।

सा भी टेस्ट ट्यूबों में मिलेगा। दो आदमी अपने-
ने गुस्से को एक ही टेस्ट ट्यूब में डालेंगे। एक
माका होगा साथ ही दोनों का गुस्सा दूर।

पति, पत्नी के आंसू टेस्ट ट्यूब में ले जाकर लेबोरेट्री में टेस्ट करायेगा। आंसुओं के घनत्व के आधार पर वह बीबी को खुश करने के लिये महंगी-सस्ती चीज खरीद लायेगा

मान लीजिये कि कुछ ऐसी परिस्थितियां पैदा हो जायें कि फिल्म स्टारों को पुस्तकें लिखने पर बाधित होना पड़े तो वे किस विषय पर और क्या लिखेंगे ? पुस्तक का टाइटिल क्या होगा ? हमारी अटकल बाजी पढ़िये ।

अविवाहित
जीवन आनन्द
चिन्टू कपूर

घट मंगनी पट ब्याह
एक आत्म कथा
मिथुन चक्रवर्ती
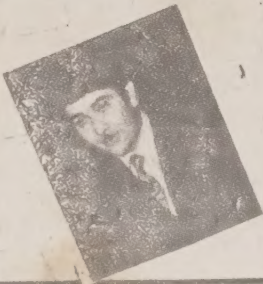
परिवार अनियोजन
महमूद

ससुराल वालों से
झगड़ा कैसे मोल लें ?
राजेश खन्ना

दुखी गृहस्थ जीवन
राखी

जीजा पुराण
सिम्पल कपाड़िया

नकल करने का हुनर
लक्ष्मी कांत प्यारे लाल
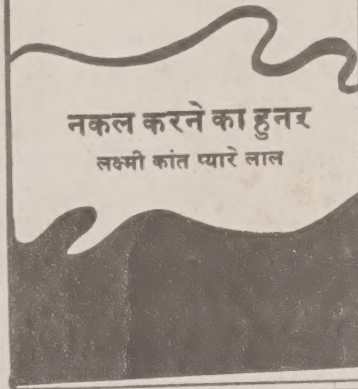
छोटी छोटी बातें
छोटी-छोटी फिल्मी कहा-
नियों और अफवाहों का संग्रह
विद्या सिन्हा

दूसरों का कैरियर
कैसे बिगड़े ?
कुछ सुझाव,
लता मंगेशकर

देश प्रेम इंडस्ट्री
देश प्रेम के नाटक द्वारा
पैसा कमाने की विधियाँ
मनोज कुमार

अभिनय कला के
नये प्रयोग
इन्दिरा गांधी
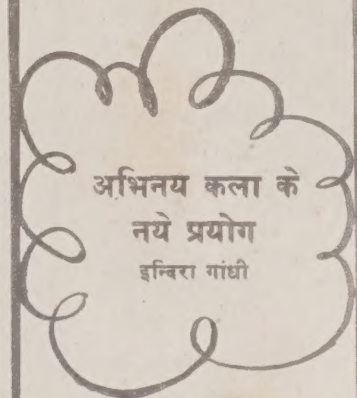
डींग विद्या

डींग मारने के तरीके व लाभ

शत्रुघ्न सिन्हा

हेमा का सपना

मेरी पत्नी बनने का जो पूरा न हो सका

जितेन्द्र

अनमोल बचन

मेरी मम्मी द्वारा प्रोड्यूसरों को कहे कुछ बोल

नीतू सिंह

बुड्ढा मिल गया

मेरे जीवन की कुछ मनो-रंजक घटनायें

सायरा बानो

असली बादशाही तिले का नुस्खा

जवानी बनाये रखने के लिये

देवानन्द
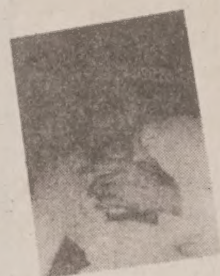
जय संतोषी मां व्रत के लाभ

विनोद खन्ना

असफलता कैसे प्राप्त करें

कुछ महत्वपूर्ण हिदायतें

आशा सचदेव

हिन्दी पंजाबी

(अप) शब्द कोश

प्रेमनाथ

कबीर डैनी और मैं

परवीन बाबी

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

महमद रऊफ, मेमन—नांदेड, महाराष्ट्र: चाचा जी, बनारस के ठग बहुत मशहूर हैं। क्या आप बनारस के रहने वाले हैं ?

उ०: अजी बनारस के ठग किस खेत की मूली होते हैं। हम दिल्ली के रहने वाले हैं और अब दिल्ली की हालत भी वह नहीं है कि आप कहें, "बीस साल दिल्ली में रहे और भाड़ झोंका।" पिछले दिनों बनारस का एक ठग दिल्ली आया, यह देखने के लिये कि दिल्ली के ठगों का आजकल क्या स्टैंडर्ड है। उस की जेब में एक अठन्नी थी और वह चांदनी चौक, जामामस्जिद, चावड़ी बाजार, अजमेरी गेट के भरपूर इलाकों में आराम से घूम रहा था। और थोड़ी-थोड़ी देर बाद जेब में हाथ डाल कर यह तसल्ली कर लेता था कि अठन्नी ज्यों की त्यों सलामत है। जब उसने देखा कि दिल्ली के ठग और जेबकतरे अपने आर्ट में धेले का तजुर्बा भी नहीं रखते तो वह हमारे आफिस में आ गया और हम से बोला, "चचा जान, मैं सुबह से एक अठन्नी जेब में डाल कर घूम रहा हूं, किसी माई के लाल ने यह अठन्नी मेरी जेब से नहीं निकाली।" इस पर बाहर से आने वाले एक और आदमी ने कहा। "इन बातों में क्या रखा है बनारसी भाई। दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर उतरने से लेकर अब तक आप दस बार बिक चुके हैं।" बनारसी ठग ने हैरान होकर पूछा, "मैं बिक चुका हूं ? क्या मतलब ?" इस पर उस आदमी ने कहा, "रेलवे स्टेशन पर उतरते ही एक जेब कतरे ने आपकी जेब साफ की अठन्नी निकाल ली। फिर वह अठन्नी आप की जेब में डाल कर उसने अपने एक साथी से कहा, बनारस से एक आसामी उतरी है, खरीदोगे ? दूसरे साथी ने कहा, कितने में ? पहले जेब कतरे ने कहा चार आने में। तो साहब एक जेब कतरे ने आप को दूसरे जेबकतरे के हाथ में बेच दिया और अब दूसरा आपके पीछे लग गया। मौका पा कर उसने जनाब की जेब से अठन्नी पार कर ली, और फिर आप की जेब में डाल दी, और आप को बेचने के लिए अपने किसी और साथी की तलाश करने लगा। साथी मिलते ही दूसरे जेब कतरे ने तीसरे जेब कतरे से कहा, बनारस से एक आसामी आई है, खरीदोगे ? कितने में ? केवल चार आने में। अब आप तीसरे जेब कतरे के हाथ बिक गये। इसी प्रकार जेब-कतरे आप को बेचते रहे और खरीदते रहे। और आप दस बार बिके। इसका कारण पता है क्या है ?" हमने पूछा, "क्या है ?" उसने उत्तर दिया, बनारसी भाई की जेब में जो अठन्नी है, वह खोटी है।" इस पर हैरान होकर बनारसी ठग ने अपनी जेब से अठन्नी निकाल कर देखी तो वह वास्तव में खोटी थी। इस पर हमने उस आदमी से पूछा, तुम्हें यह सब बातें कैसे पता हैं ? तुम कौन हो ?" उसने कहा, मैं वह आखरी ठग हूं, जिसने इन्हें बीस पैसे में खरीदा है। और इन्हें किसी और के हाथ बेचने का मौका ढूंढ़ता हुआ इनके पीछे यहां तक आ गया हूं अब मैंने इन्हें आपके हाथ बेचा, बीस पैसे मैं किसी और दिन आ कर ले जाऊंगा।

अब तो आप हमसे कभी नहीं पूछेंगे कि क्या हम बनारस के रहने वाले हैं ?

प्रमजीत इरानी—३७-बी लेन, लन्दन: चाचा जी, लन्दन में आपके कितने भतीजे हैं ?

उ०: छोटे बड़े सब मिला कर कोई तीस हजार। संसार का कोई देश ऐसा नहीं जहां 'दीवाना' के दीवाने न हों। शक्कर खोरे को शक्कर और मूजी को टक्कर हर जगह मिल जाती है।

सुरेश कुमार शर्मा—मुंगेर: दिल में दर्द रहता है, क्या करूं ?

उ०: इसके लिए श्री जयप्रकाश नारायण और आचार्य कृपलानी से सलाह लीजिये। उन्हें इस बात की शिकायत है कोई उन से सलाह नहीं लेता।

राजेश खन्ना पप्पू—लुधियाना: दस पत्र लिख चुका हूं। आपने उत्तर एक का भी नहीं दिया। आखिरी पत्र है मेरा।

उ०: प्रश्न आपने इसमें एक भी नहीं पूछा है। हम उत्तर क्या दें ? क्या बाकी दस पत्रों में भी आप ने यही कमाल किया था ?

संजय कुमार गुप्ता—तपकरा: प्यारे चाचा जी, आप को बातूनी की उपाधि किस ने दी ?

उ०: उन प्यारे भतीजों ने जो बातें करने में हमारे भी चाचा हैं।

नरिन्द्र डेविट "बीना"—कपूरथला: अगर आपके सामने भगवान आ जाएं तो आप उनसे क्या कहेंगे ?

उ०: एक छोटी सी बात कहेंगे कि भगवान तो तू लाखों करोड़ों साल से बना हुआ है एक दिन के लिए इन्सान बनकर और ज़रा किसी की लिफ्ट मांग कर तो देख।

सुरेश कक्कड़......: एक लड़की ने मुझे पत्र लिखा है, पर अपना नाम पता नहीं लिखा। मैं उत्तर किस पते पर दूं ?

उ०: पूरा पता आपने अपना भी नहीं लिखा है। शायद आप अपने पते पर भी उसे पत्र नहीं लिख सकते। अगर लिख सकते हों तो यह शेर उसमें अवश्य लिखिये।

हमसा मिलेगा कोई दीवाना किताब में ?
अपनी तरफ़ से खुद ही लिखे खत जवाब में।

एस० आर० कपाली—पंगाल, काठमांडू: आज के युग में कोई किसका विश्वास करे ?

उ०: हमारी जनता पार्टी के उन नेताओं का जिन्हें आत्मविश्वास नहीं।

रामदेव, मुण्डा—बेरमो: क्या लोगों की तरह आप भी "पैसे के दीवाने हैं ?"

उ०: केवल उस हद तक कि हमारे "दीवाने के पैसे हैं," जी हां, पूरे सौ पैसे।

केवल प्रकाश—काशीपुर: मैं जो सोचता हूं सदा उस से उलट होता है। क्या करूं ?

उ०: जनता पार्टी में शामिल हो जाईये। वहां सब का यही हाल है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

मैं ढूंढ़ता हूँ तुमको रातों के ख्यालों में ।

बन्द करो बकवास और ख्यालों में ढूंढ़ना छोड़ो । वर्दी पहनों और हकीकत में बिल्ला बदमाश को ढूंढ़ो। वर्ना और बदनाम हो जाओगे ।

जा रे बहना जा तू अपने घर जा ।

बन्द करो बकवास, तुम्हारा काम है कपड़े दिखाना—और कोई नया प्रिन्ट दिखाओ ।

छम छम नाचत आई बहार

बन्द करो बकवास, मेरी बहार चाची मोटी है तो क्या हुआ, तुम्हारे मोहन चाचाजी तो और भी मोटे हैं । जब वह आते हैं तो घर और ज्यादा कांपता है ।
धम

। दशरथ को बम्बई में एक कम्पनी में इंजीनियर की नौकरी मिली थी। उसे रहने के लिये कम्पनी के मैनेजर ने अपनी कोठी 'रचना सदन' बहुत ही थोड़े किराये पर दे दी थी। वह कोठी वर्षों से खाली पड़ी थी। पास-पड़ोस के लोगों का कहना था कि उसमें कोई प्रेतात्मा रहती है जो रात को सिसकियां भरती है और दशरथ-दशरथ पुकारती है। इस डर से उस कोठी में कोई नहीं आता था।

जब दशरथ कोठी में दाखिल हुआ तो लोगों ने उसे भी प्रेतात्मा वाली बात बताई। लेकिन दशरथ हिम्मत करके उसमें रहने लगा। दशरथ ने जैसे ही अपना सामान रखा एक लड़की वहां आई और उसने बताया कि मुझे मेरी बहन ने जो मैनेजर साहब के यहां काम करती है, आपके यहां घर का काम करने के लिये भेजा है। उसने वर्षों से गन्दी पड़ी कोठी को मिन्टों में साफ कर दिया तो दशरथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह प्रेतात्मा दशरथ के सामने आई और उसे पिछले जन्म की कहानी सुनाने लगी।

आगे पढ़िये

रचना ने हँसकर तस्वीर रूपा के सामने कर दी और रूपा तस्वीर देखकर अनायास उछल पड़ी—फिर आश्चर्य से आँखें फाड़कर बोली—

'अरे—यह तो दशरथ है।'

'हाँ—वही है।'

'मगर···मगर···तेरे डैडी इसे कैसे जानते हैं?'

'अरे—यह हमारे मुनीम जी के लड़के निकले।'

'अच्छा।' रूपा ने आश्चर्य से कहा, 'अंकल ने तेरे लिए अपने मुनीम के बेटे को पसन्द कर लिया—या यह तेरा अपना ही चुनाव है।'

'नहीं—यह डैडी का चुनाव है।'

'झूठ तो नहीं बोल रही?'

'सच मान...तेरी सौगन्ध यह डैडी ही का चुनाव है।

'कालिज वाले तुझे और दशरथ को स्टेज पर पति-पत्नी के रूप में देखकर और तेरी सुन्दर एक्टिंग देखकर यह समझने लगे थे कि तुम लोग एक-दूसरे से प्यार करते हो।'

'भगवान की सौगन्ध···मेरे मन में कोई ऐसा विचार नहीं था···वह तो मैंने इतना डूबकर अभिनय किया कि मुझे ऐसा लगने लगा कि सचमुच मैं अपने पति को यमराज से वापस माँग रही हूँ।'

'अच्छा···अब क्या विचार है।'

'विचार···कुछ भी नहीं—' रचना हँसकर बोली, 'हाँ यह चुनाव देखकर जाने क्यों मन को ऐसा लगा जैसे भगवान ने मेरे ही लिए बनाया था···इसलिए ड्रामे में अभिनय में इतनी कुशलता आ गई थी।'

'खूब···अगर किसी और से तेरी शादी होनी?'

'तो मैं उसी से प्यार करती···भगवान जानता है कि मैंने केवल पति के प्रेम को मन में बसाया है—जैसा कि तूने किया है···मेरा पति कोई भी होगा मैं उसे इतना प्यार दूंगी कि उसे कभी जीवन में प्यार का अभाव न अनुभव होने पाए···अपने प्यार का खजाना मैंने केवल अपने पति के लिए संभालकर रखा हुआ है···तू तो मुझे जानती है।'

'खैर कुछ भी हो···सच ही तू सौभाग्यशालिनी है कि दशरथ जैसे पति की अर्धांगिनी बन रही है—वह तो लाखों में एक है—जाने कितनी लड़कियाँ उसके लिए आहें भरती है।'

रचना के होंठों पर लाजमय मुस्कान फैल गई और उसकी कल्पना में दशरथ की छवि उभर आई—और दिल की धड़कनें कुछ तीव्र हो गईं। एकाएक रूपा ने उसे चौंका दिया—

'अच्छा···मैं जरा अंकल से मिलकर आती हूँ।'

रूपा कमरे से निकल गई। रचना खोई-खोई सी दरवाजे को देखती रह गई जिससे रूपा निकलकर बाहर गई थी—

☐ सुहाग का कमरा सजा हुआ था।

कमरे में हिना के इत्र की हल्की सुगन्ध फैली हुई थी। रंग-बिरंगे फूलों के हार मसहरी पर लटके हुए थे और कालीन पर फूलों की पंखड़ियाँ फैली हुई थीं। एक शानदार नर्म गदेले पर रचना दुल्हन बनी बैठी थी··· उसके बदन पर लाल जोड़ा था और हाथों में काँच की चूड़ियाँ···माँग में सिन्दूर, माथे पर बिंदिया और हथेली और पाँव के तलवों में मेंहँदी लगी थी—घड़ी की टिकटिक के साथ ही रचना का दिल धड़क रहा था। तनिक सी आहट पर उसे ऐसे अनुभव होता जैसे दशरथ आ रहा है—और उसका दिल उछाल भरकर कंठ में आकर अटकने-सा लगता···किन्तु अभी तक दशरथ का कोई पता नहीं था—

रचना की कल्पना में बार-बार दशरथ का दुल्हा बना रूप उभरने लगता—सफेद जोड़े में फूलों से लदा दशरथ कितना बाँका, कितना सुन्दर लग रहा था···जब उसके फेरे हो रहे थे तो रचना का जी चाह रहा था कि वह दशरथ के ऊपर न्योछावर हो जाए··· संकोच और लाज होते हुए भी उसका मन चाहता कि वह बार-बार उसको घूंघट की ओट से देखती रहे···एक विचित्र व्याकुलता से उसका मन दशरथ की ओर खिंचता चला जाता था···जैसे चुम्बक के प्रभावाधीन लोह कण खिंच जाते हैं···।

फिर जब उसे सुहाग-कक्ष में लाकर बिठा दिया गया तो उसका जी चाहा की दशरथ अभी आ जाए···और वह अभी-अभी दशरथ के चरणों से लिपट जाए···फिर उसने अपने आप को समझाया था···

'बेचैनी किस बात की है···अब तो वह मेरे ही हैं···थोड़ी देर में आ जाएंगे।'

फिर उसने घूंघट में से घड़ी देखी··· रात के दो बजने वाले थे किन्तु दशरथ का कुछ पता नहीं था—पहली बार रचना के मन में हल्का-सा डर उत्पन्न हुआ।

'क्यों नहीं आए···वह अभी तक ?'

'ऊंह...डर काहेका ? आखिर उनके भी दोस्त यार हैं···और ऐसे समय में तो दोस्त प्रायः रात भर दूल्हा को रोक रखते हैं···'

'अब नहीं तो थोड़ी देर बाद आ जाएंगे।'

'फिर मैं उठकर उनके चरण छूऊंगी।'

'वह मुझे उठाकर सीने से लगा लेंगे।'

'और···और···।'

अचानक रचना ने स्वयं ही शर्मा कर दोनों हाथों से मुंह छिपा लिया। उसका शरीर थर-थर कांप रहा था और बदन में पसीने की बूंदे रेंग रही थीं—वह सोच रही थी—

'फिर वह कल सुबह उठेंगे तो उनसे कैसे नजरें मिलाऊँगी ?'

'ऊँह···आखिर कब तक शर्माऊँगी ? एक दिन तो लाज का घूंघट उतारना ही पड़ेगा।'

'और फिर तो अब वह मेरे हैं—उन्हें मेरी ही तो जरूरत होगी।'

'मैं अपने हाथों से उनके कपड़े प्रेस किया करूंगी।'

'अपने हाथों से उनकी नेकटाई बाधूंगी—उन्हें जूते पहनाऊँगी···'

'और···और, मैं उनके खाने-पीने का प्रबन्ध भी अपने ही हाथों में रखूंगी।'

'उनके लिए नाश्ता भी स्वयं ही लाया करूँगी···खाना भी आप परोसा करूँगी···'

'उफ···कितनी व्यस्त रहूंगी मैं उन कामों में···।'

'किन्तु कितनी प्रिय व्यस्तता होगी यह···।'

रचना के बदन में उल्लासमयी झुरझुरी सी रेंगने लगी।

'जब मैं उनके कपड़े छुआ करूंगी तो कैसा लगा करेगा ? उनके कपड़ों में उन्हीं का-सा स्पर्श होगा ना···।'

'उनके रूमाल मैं अपने हाथों से धोऊंगी···उनके पसीने की महक भी प्रिय होगी···।'

'उफ़···फ़ो···वह मेरे अपने हैं—मैं अब पत्नी हूँ···उनकी अर्धांगिनी हूं···मैं कितनी सोभाग्य-शालिनी हूं···भगवान मैं कितनी सौभाग्य-शालिनी हूं···।'

रचना का मन चाहने लगा कि वह बिस्तर से उठकर खुशी से नाचने लगे···

तभी किवाड़ में हल्की-सी चिरमिराहट हुई—रचना को ऐसे लगा जैसे उसका दिल उछलकर गले में आ गया हो—किवाड़ खुला और जैसे धीरे-धीरे दशरथ प्रविष्ट हुआ। दुल्हन बनी लाल गठरी में एक भूचाल-सा आ गया···चूड़ियाँ बज उठीं···पायल बज उठी···सांसें ऊपर नीचे होने लगीं—और धड़कनें···! जैसे भीतर बैठा ढोल कोई पीट रहा हो—

'हे भगवान्! यह बदन में सन्नाटा-सा क्यों छा रहा है ? कहीं मेरा दिल धड़कना न बन्द कर दे···उफ़ फ़ो···वह आ गये हैं···वह मेरे सामने खड़े हैं—।'

'कितने सुन्दर लग रहे हैं वह।'

'अब वह आगे बढ़ेंगे···'

'मुझे उनके चरण छूने के लिए उठना पड़ेगा।'

'किंतु मेरी टाँगे क्यों कांप रही हैं ?'

'हे भगवान् ! क्या मैं उठ सकूँगी ?'

रचना ने फिर घूंघट की ओट से देखा--

'दशरथ की पीठ दरवाजे से लगी थी और वह चुपचाप खोया-सा शून्य में घूर रहा था—उसका चेहरा बिल्कुल सपाट था···आँखों से लगता था कि उसके अन्तः-स्थल में भी एक भूचाल-सा आया हुआ था— जैसे वह बहुत देर तक···अधिक रोया हो···

रचना के मन को झटका-सा लगा—

'हे भगवान्! उनकी यह दशा क्यों ?'

'शायद थके हुए हैं।'

'जागे भी तो हैं—शायद इसीलिए आँखें लाल हों।'

'हे···भगवान्···जल्दी से यह संकोच की दीवार टूट जाए।'

'मैं उनका सिर अपनी गोद में रखकर उनका माथा सहलाऊँ।'

'उनकी टांगे दबाऊं ?'

'उनके बालों में उंगलियाँ करूं।'

दशरथ कुछ क्षण तक यूं ही खड़ा रहा—फिर उसने जेब से सिगरेट का पैकिट और दियासलाई निकाली और एक सिगरेट सुलगाई···धीरे-धीरे सिगरेट के कश लेने लगा···उसकी आँखों में हल्की-हल्की नमी तैर रही थी···रचना को एक बार फिर अपना दिल बैठता हुआ-सा लगा।

'हे भगवान् ! यह उनकी आँखें क्यों भीग रही हैं।'

'शायद धुआँ लगने से पानी आ गया होगा।'

'स्पष्ट है—वरना यह रोने का कौन-सा समय है।'

रचना का दिल बेचैनी से धड़कने लगा···अजीब-सी शंकाएं उठने लगीं—

'यह आगे क्यों नहीं बढ़ते ?'

'द्वार से लगे ही क्यों खड़े रह गए हैं ?'

'शायद वह भी मेरी तरह शरमा रहे हों।'

'उनके दिल में भी झिझक हो।'

'उनको भी ड्रामे के वह दृश्य याद आ गये होंगे, जब हम दोनों पति-पत्नी बने थे···'

'आज वास्तव में हम एक-दूसरे के जीवन-साथी हैं।'

'शायद उन्हें वही दृश्य···वही समय याद आ रहा होगा।'

रचना घूंघट की ओट से दशरथ को देखती रही और दशरथ उसी प्रकार दरवाजे से लगा सिगरेट के कश लेता रहा—फिर जब सिगरेट समाप्त हो गई तो दशरथ ने उसका टुकड़ा फ़र्श पर डाल कर जूते की नोक से मसला···और एक बार रचना का पूरा शरीर बिजली के कौंधे के समान कांप कर रह गया—

'अब वह मेरे पास आएंगे।'

रचना के रौंगटे खड़े हो गये···बदन में लहरें-सी दौड़ने लगीं···दशरथ अब दरवाजे के पास से हट गया था···फिर वह आगे बढ़ा···उसने एक तिरछी दृष्टि रचना पर डाली और बढ़कर एक लांग चेयर पर अध-लेटा-सा बैठ गया...उसने अपनी आँखें कुहनियों से छिपा ली···

छनाक···छनाक···छनाक···रचना का ऐसे लगा जैसे बहुत से झाड़ फानूस एक साथ गिरकर टूट गए हों—जैसे रंग-बिरंगी रोशनियाँ एक-दूसरी में गडमड हो गई हों··· जैसे एकाएक गरम हवा के झौंकों से सारे फूल मुर्झा गए हों—वह घूंघट की ओट से दशरथ को देखती रह गई थी जिसकी आँखों से बहे आँसू उसके गालों पर रेखाएं बना रहे

—शायद वह हल्की-हल्की सिसकियाँ भी र रहा था…

'हे भगवान् !' रचना ने डूबते हुए दिल कहा, 'यह मैं क्या देख रही हूं ?'

'यह रो क्यों रहे हैं ?'

'क्या यह इस शादी से खुश नहीं हैं ?'

'यह सब क्या है भगवान् ?'

रचना को ऐसे लगा जैसे उसे किसी चे पहाड़ की चोटी से धकेल दिया गया …और वह नोकीले पत्थरों से टकरा कर यल होती हुई खाईयों में लुढ़कती चली रही हो—जैसे वह किसी बहुत सुन्दर हल में हो और वह महल रेत के महल के मान गिरता चला गया हो—उसका जी हा कि वह चीख-चीख-कर रोना आरंभ र दे…लेकिन उसकी आवाज कंठ ही में ब कर रह गई—उसे चक्कर पर चक्कर ने लगे…उसका सिर स्वयं ही झुकता आ घुटनों में जा लगा…

उसके कानों से अब भी दशरथ की सकियाँ टकरा रही थीं…।

▢ रचना ठाकुर साहब के कमरे में प्रविष्ट ई तो उसने साड़ी का पल्लू सिर पर कर लया और अपने चेहरे को भली प्रकार ढांक र होंठों पर लजीली-सी मुस्कान लाने का यत्न करने लगी। ठाकुर साहब सामने ही हील चेयर पर बैठे थे। रचना को देख कर नके होंठों पर मुस्कराहट फैल गई और नेह भरे स्वर में बोले—

'आओ बेटी, मैं तुम्हारी ही राह देख हा था।'

रचना ठाकुर साहब के पास पहुंची। न्होंने उसके सिर पर हाथ फेर कर कहा—

'दशरथ कहाँ है बेटी ?'

'जी—बाथ-रूम में।'

'तू इस शादी से खुश तो है बेटी ?'

'हाँ डैडी, मैं बहुत खुश हूँ।'

रचना ने बड़ी मुश्किल से अपने उमड़ते ए आँसुओं को नियंत्रित किया और बोली—

'मैं बहुत खुश हूँ डैडी। वह बहुत अच्छे ।'

'शुक्र है भगवान का' ठाकुर साहब ने क लम्बी गहरी सन्तोष की साँस ली और हा—

'मेरे सिर से एक बड़ा बोझ उतर गया।'

रचना ठाकुर साहब की गोद में सिर के बैठी रही और आंसुओं और सिसकियों को रोकने का प्रयत्न करती रही। ठाकुर साहब ने कहा—

'अब भगवान् मुझे अपने पास भी बुला लें तो भी मैं दुःखी नहीं हूँगा।'

'भगवान् न करे डैडी…भगवान् आपकी छाया हजारों बरस मेरे सिर पर रखे।'

इतने में दशरथ अन्दर आया और रचना जल्दी से ठाकुर साहब से अलग होकर खड़ी हो गई…सिर पर आँचल ठीक करने लगी। दशरथ ने पास आकर ठाकुर साहब के चरण छुए और ठाकुर साहब ने उसके सिर पर हाथ फेर कर स्नेह से कहा—

'जीते रहो—भगवान् तुम्हें सदा सुखी रखे।'

दशरथ कुछ न बोला। वह रचना की ओर देखे बिना चुपचाप खड़ा हो गया। ठाकुर साहब ने कहा—

'जानते हो बेटे…मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है ?'
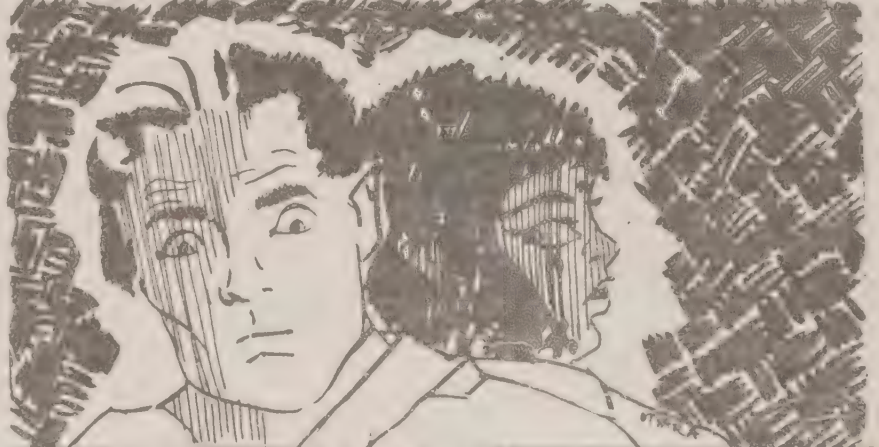
'जी नहीं—।' दशरथ ने धीरे से कहा।

'बेटा ! मेरा इस दुनिया में रचना के अतिरिक्त कोई नहीं…रचना के पति के नाते तो तुम मेरे दामाद हुए लेकिन दामाद से बढ़ कर अब तुम मेरे बेटे हो।'

दशरथ चुप खड़ा जमीन की ओर देखता रहा। ठाकुर साहब ने फिर कहा—

'मेरे पास जो कुछ है वह रचना का है…और अब रचना से अधिक वह तुम्हारा है—मैं बूढ़ा हो गया हूँ इसलिए अब मुझे आराम की आवश्यकता है…अब अपना कारोबार तुम स्वयं संभालो—आज से तुम आफिस जाना आरम्भ कर दो।'

'जी—।' दशरथ ने आँखें झुकाए-झुकाए धीरे से कहा, मैं अपनी शिक्षा किसी भी हालत में अधूरी नहीं छोड़ना चाहता।'

ठाकुर साहब दशरथ के इस कोरे उत्तर पर सन्नाटे में रह गए। रचना का दिल जोर से धड़क उठा तभी पीछे से ज्वाला प्रसाद की आवाज सुनाई दी—

'नमस्ते मालिक।'

रचना ने जल्दी से सिर पर आँचल ठीक किया और आगे बढ़ कर ज्वाला प्रसाद जी के पैर छूए। ज्वाला प्रसाद ने उसके सिर पर हाथ फेर कर कहा—

'जीती रहो—जीती रहो…अखंड सौभाग्यवती हो।'

फिर ज्वाला प्रसाद ठाकुर साहब से सम्बोधित होकर बोले—

'अब कैसी तबियत है मालिक ?

'तबीयत तो ठीक है ज्वाला प्रसाद जी लेकिन आपसे एक शिकायत है।'

'शिकायत ! !' ज्वाला प्रसाद ने जल्दी से हाथ जोड़कर कहा, 'मालिक ! मुझसे क्या दोष हुआ है ? मैं हर सजा भोगने को तैयार हूं।'

'देखिए…अब आप मेरे सम्बन्धी भी हैं इसलिए मुझे आप 'मालिक' मत कहा कीजिए।'

'जो आज्ञा मालिक…म…स…मतलब ठाकुर साहब, बरसों पुरानी आदत है ना…जरा मुश्किल ही से जाएगी ?'

'आपकी यही आदत समाप्त करने के लिए हमने अब फैसला किया है कि आपको अब हमारे दफ्तर में नौकरी नहीं करने दिया जाएगा।'

'जी—।'

'हमारे दामाद दशरथ की शिक्षा अभी अधूरी है…जब तक उसकी शिक्षा पूरी न हो जाए हमारे स्थान पर आप आफिस जाया कीजिए।'

(पृष्ठ ४० पर)

क्या बात है गरीबचन्द तू अकेला बैठा है ? तेरे चौधरी साहब लोग कहां गये ?
जब से चौधरी चरणसिंह को गृहमंत्री पद से निकाला गया तब से उनके दिमाग ठिकाने नहीं हैं। वह चौधरी चरणसिंह की कोठी पर बैठ कर आल्हा-ऊदल गाते रहते हैं। परसों इतवार को कंझावला के किसानों की जो टोली प्रधानमंत्री की कोठी पर गयी थी उसमें वह भी शामिल हो गये।
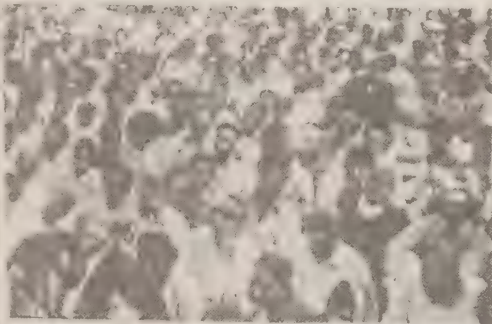
वह देखो वह पेड़ के नीचे जो दो किसान सफेद धोती-कुर्ते छतरी ताने दिखाई दे रहे हैं वही तो हैं सिलबिल और पिलपिल मोरार जी के मुर्दाबाद के नारे यही दोनों तो सबसे ज्यादा ग फाड़-फाड़ कर लगा रहे थे। पुलिस पर सबसे पहले ईंट और पत्थर इन्हीं दोनों ने फेंकने शुरू कर दिये थे। मेरे मना क पर भी दोनों जेब में डाल कर सब्जी काटने वाला छुरा गये। रात भर सपने में यही बड़बड़ाते रहे कि हम मुरार को सबक सिखायेंगे। गिरफ्तार हुए किसानों में वह दोनों शामिल हैं।
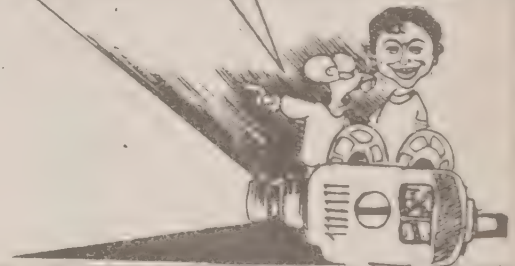
यह तो सचमुच ही दंगा फसाद करने पर उतर आये। मैं तो सोच रहा था कि उनकी किसानों की फौज लाकर दिल्ली की ईंट से ईंट बजाने की बातें खाली पीली बम है लेकिन यह तो सीरियसली इस काम में लग गये हैं। चौधरी चरण सिंह का रंग इन पर खूब चढ़ा है।
क्यों नहीं होगा ? चरण सिंह किसानों का इकलौता ही तो नेता है। पिलपिल और सिलबिल भी चालीस एकड़ वाले बड़े जमींदार हैं। अब बेचारों का क्या होगा ? जेल की रुखी सूखी खायेंगे।
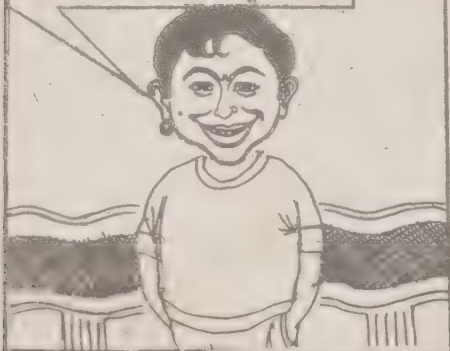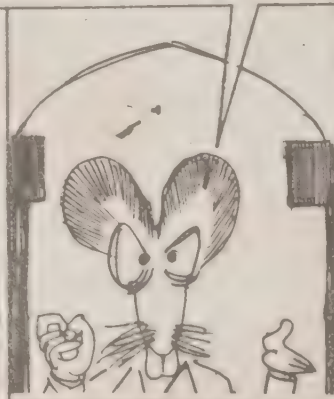
जिन्होंने कभी बगैर देसी घी के रोटी नहीं खाई हो, बगैर लाल खांड के चावल न खाये हों वह जेल की कच्ची पक्की रोटी कैसे खा पायेंगे ? उनके फूल से कोमल बदन को खटमल फुटबाल ग्राउंड समझ कर ख्यूरंख टूर्नामैंट करेंगे। इन बातों को सोच कर मेरा कलेजा मुँह को आता है।
मैं उनको जमानत पर छुड़वा लाता हूं। तू उनकी खोपड़ी से च सिंह का मत भगाने की तरकीब सो
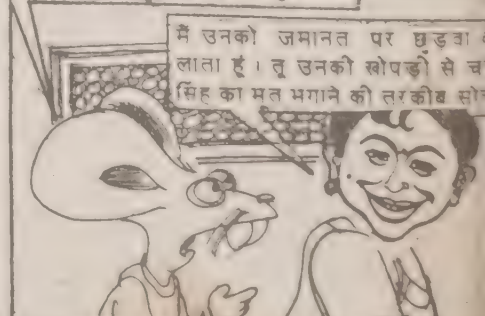
पांयलागू चौधरी साहब, यह थमारी क्या दशा हो गयी है। पुलिस वालों ने थारे थोबड़्यों का डिजेन बदल कर रख दिया है। कोई बात नहीं जी, कुछ दिन आराम से घर बैठ जाओ, सब ठीक हो जायेगा। थारे सिर माथे पर पुलिस वालों के घणे लट्ठ बजे दीखते हैं। थारे घर मैंने तार भेज दिया है कि जल्दी दो किलो देसी घी भेज देयो।
चूहे, यह हमारे सिर माथे पर मामूली चोट नहीं है। यह तो दुलहन का सिंगार है। खून नहीं है। हिन्दुस्तान के इतिहास में पहली बार किसान जागा है। अपने जन्मसिद्ध अधिकार के लिये लड़ने लगा है। यह तो बेटे लड़ाई की शुरुआत ही है। लड़ाई बहुत लम्बी चलेगी।
मेरे जिसम पर पड़ी पुलिस की एक-एक लाठी जनता पार्टी के कफन की कीलें साबित होगी।
र, कोई बात नहीं! मुझे बहुत फख है कि आज भी ऐसे वीर र सच्चे इन्सान इस दुनिया में जिन्दा हैं जो अपने नेता के ए सिर तक कटवाने को तैयार हैं। आंधी, तूफान और लियों की बरसात में छाती तान कर निकलने की हिम्मत खते हैं। जिस देश में ऐसे-ऐसे वीर हों उसकी तरफ कोई श्मन आंख उठा कर देखने की भी हिम्मत नहीं कर सकता। न्द्रशेखर आजाद और भगतसिंह की जगह खाली नहीं है।
यही हमारे देश का दुर्भाग्य रहा है कि योजना बनाने वालों ने गांवों को आधार नहीं समझा। जबकि देश की आबादी का ७०% गांवों में रहता है। सारा पैसा शहरों में कारखाने लगाने पर ही लगाते रहे। नेतागण महात्मा गांधी जी को भूल गये। गांधी जी की अर्थव्यवस्था का आधार गांव था। यह कैसा अन्याय है। चौधरी चरणसिंह साहब ने दोबारा गांधीवाद को लाने का घोर संघर्ष छेड़ा है। अरे भोले लोगों जागो, चौधरी साहब के रूप में गांधी जी ने दोबारा अवतार लिया है।
री साहब यह बात मेरी समझ में नहीं आई। आपके चौधरी ण सिंह जी योजना के बारेमें बात करते हुये तो गांधी की ा जपते हैं! लेकिन महात्मा गांधी जी ने तो अपना सारा न हरिजनों और पिछड़े वर्गों की भलाई में लगा दिया था। तो गरीब, भूमिहीन, हरिजनों के सेवक थे, लेकिन थारे चौधरी साहब तो सिर्फ थारे जैसे बड़े-बड़े जमींदारों का भला चाहते हैं। हरिजनों के तो वह खून के प्यासे हैं। भूमिहीन किसान और मजदूरों के लिये उनकी योजनाओं में कोई जगे नहीं है। गांधी जी का नाम सारे नेता अपने-अपने मतलब सा लिये करते हैं। मैं चूहा होते हुये भी हिन्दुस्तान के सारे ने का भेद जान गया हूँ।
हूंह!

हिन्दुस्तान की सारी पार्टियों को मिल कर एक हो जाना चाहिये ग्रौर उसका नाम होना चाहिये ग्रैंड फ्रॉड पार्टी ग्रॉफ इण्डिया।

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।

आपके पत्र

'दीवाना' का अंक २४ पढ़ा जिसके सभी स्तम्भ, विशेषकर 'चिल्ली लीला, पंचतन्त्र, सिलबिल-पिलपिल, एवं व्यंग चित्र विशुद्ध हास्य से परिपूर्ण लगे।' दीवाना, सचमुच एक हास्यपूर्ण मनोरंजक पत्रिका है जिसमें पाठकों को अपनी बात कहने-पूछने का पर्याप्त अवसर मिलता है। राजनैतिक व्यंग मजेदार होने के साथ-साथ अर्थपूर्ण होते हैं। मेडीकल छात्र होने के नाते 'डा० झटका का पात्र मुझे अत्यधिक रोचक लगता है। मेरी शुभकामनाएं सदा 'दीवाना' के साथ हैं।

राकेश चौधरी—पटियाला

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मैं आपकी दीवाना पत्रिका का अभी-अभी ४ माह से नया पाठक हूं और अब मैं इसका नियमित पाठक बन गया हूं। अंक २४ मुझे प्राप्त हुआ। यह अंक अन्य अंकों की अपेक्षा रोचकता और मनोरंजकता से परिपूर्ण था। खासकर इसमें फिल्मी स्टाइल में गरीबी हटाओ, झमूरा, पंचतंत्र तथा पिलपिल सिलबिल बहुत रोचक लगा।

सुरेन्द्र कुमार गुप्ता—रायपुर (म. प्र.)

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

आपका २५ वां अंक दीवाना मिला। मुखपृष्ठ पर चिल्ली का चित्र देख कर बहुत हंसी आयी। इसके अलावा मोटू-पतलू, पिलपिल सिलबिल, और सवाल यह है, फैण्टम, क्यों और कैसे, दूसरी आत्मा और काका के कारतूस बहुत अच्छे लगे।

नाजीर अहमद—मुगलसराय

मैं 'दीवाना' को बहुत चाव से पढ़ता हूं। मैं दीवाना का प्रत्येक अंक अपने कॉलेज में ले जाता हूं। वहाँ मेरे सभी साथी इसे पसन्द करते हैं। 'दीवाना' अंक २५ मिला। मुझे विशेषकर 'चिल्ली लीला' बच्चा झमूरा, एवं कहानी मैं मकान, पैरोडी 'कसमें आये' कविता 'मन के लड्डू' काफी रोचक लगे। मेरी आपसे एक राय है कि आप 'दीवाना' में रंगों की कटौती न करें सभी स्थाई स्तम्भों को रंगीन करें।

सत्यपाल बधावन—कतरास कालेज

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

दीवाना का नया अंक २६ मिला पिलपिल की खोपड़ी पर बारिस की बूंदें पड़ती हुई देखकर हंसी न रोक सका। यह अंक भी मजेदार रहा चिल्ली लीला, काका के कारतूस, आपस की बातें, डाक्टर झटका को चमत्कारी दवा, छुट्टन-मिट्टन, फैंटम आदि स्तम्भ मजेदार रहे संगीता का धारावाहिक उपन्यास दूसरी आत्मा कहानी बहुत अच्छी लगी, मेरी ओर से लेखक को बधाई। कृपया आप अमिताभ बच्चन का फोटो छाप कर परिचय भी दें और फैंटम को दो पृष्ठों में दिया करें।

मोहम्मद मोईन—काशीपुर

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना का प्रत्येक नया अंक देखकर मन इस तरह खिल उठता है जैसे कि वसंत के मौसम में फूल। यह वसन्त केवल तब तक ही रहता है जब तक दीवाना का अंक हाथ में रहता है। उसके बाद पढ़े हुये दीवाना की मीठी यादें और नये अंक का इन्तजार। जब कभी इन्तजार में दिल बहुत बेचैन हो उठता है तो यह कह कर दिल को कुछ तसल्ली दे लेते हैं कि जो मजा इन्तजार में वो विसाले यार में नहीं।

गुरमीत सिंह 'बीती—करनाल

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दिन प्रतिदिन बुक स्टाल पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर काटते-काटते दीवाना के हीरो चिल्ली से मुलाकात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ! वर्ना इससे पहले दूसरा कोई चिल्ली से हाथ साफ करता। यानी मुझे दीवाना का ताजा अंक २५ प्राप्त हुआ। नए अंक पर चिल्ली का कारतूस मुखपृष्ठ पर देखा तो मुंह से हंसी की वर्षा होने लगी। इस अंक पर मुझे 'सवाल यह है' स्तम्भ सबसे लोकप्रिय लगा। सुरेन्द्र अग्रवाल की हास्य रचना 'डरपोक' ने दीवाना पर हास्य की एक वट के बीज बो दिये हैं! आशा है आगे का अंक से इसी तरह की रचना देते रहेंगे।

सी. आर. गिरी—दुलियजान

आपका दीवाना पत्र अंक २५ मिला। पढ़कर बहुत ही आनन्द मिला चिल्ली का मुखपृष्ठ देखकर ही हंसी का फव्वारा छूट पड़ा, मोटू-पतलू तो पढ़ते ही पढ़ते आंखों में आंसू छलक पड़े बंद करो बकवास तो सचमुच ही बकवास है बाकी स्तम्भों से आप खुद ही जानते हैं।

नरेन्द्र कुमार गाबा—हांसी

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

दीवाना अंक २६ मिला। यह अंक भी अन्य अंकों की तरह से निराला था आप से एक शिकायत है कि आजकल आप दीवाना अत्यन्त लेट निकाल रहे हैं। और अंक २६ जिसे हमें २७ तारीख को मिल जाना चाहिए था वह अंक हमें सोमवार ७ तारीख को मिला। आशा है आजकल आप अब दीवाना को लेट न निकालेंगे। नये 'दीवाना' का प्रत्येक स्तम्भ 'एक से बढ़कर एक' था। 'दूसरी आत्मा' कहानी अच्छी लगी। मैं चाहता हूं कि दीवाना 'दिन दूनी रात चौगुनी' उन्नति करे। ये उन्नति तभी सम्भव है जबकि दीवाना समय पर प्रकाशित हो।

बी० के० भाटिया—मेरठ

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना अंक २५ प्राप्त हुआ, पढ़कर दिल खुशी से फूल गया, बर्स्ट होते-होते बच गया। दीवाना के यूं तो प्रायः सभी स्तम्भ ठीक हैं परन्तु यह हास्य पत्रिका है इसलिए इसमें जो भी सामग्री हो हास्य व्यंग से भरपूर हो। इसमें उपन्यास, राशिफल, तथा फैंटम के स्थान पर हास्यलेख कहानी प्रकाशित हों तो पत्रिका में आठ चांद लग जाए। आप पाठकों कि पत्रों का उत्तर देने की कृपा करें ताकि पाठक उत्साहित हों।

गुरदास परवानी—बरेली

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

दीवाना का नया अंक २६ काफी दिनों की इन्तजार के बाद मिला। मुखपृष्ठ देखते ही दिल में हलचल मच गई चिल्ली-लीला २३१ वाकई ही प्रशंसनीय थी! मोटू-पतलू बेहद पसन्द आया पिलपिल-सिलबिल, फैंटम सवाल यह है, परोपकारी व बच्चा झमूरा भी काफी रोचक थे बन्द करो बकवास असल में ही बकवास थी काका के कारतूस हास्यप्रद थे। दूसरी आत्मा भाग ३ धारिवाहिक उपन्यास काफी रोचक था कुल मिलाकर दीवाना ने हमें दीवाना बना दिया सिर्फ कमी थी तो सिर्फ रंग भरो प्रतियोगिता की। आशा है भविष्य में दीवाना जैसी पत्रिका में ऐसी कमी नहीं रहेगी।

भोलो—हरि नगर, घन्टा घर

रहस्यपूर्ण जासूसी कहानी:

खून की पुकार

पिछले दिनों गेंदा मल हीरा मल जौहरी की दूकान पर डाका पड़ा, जहाँ हीरा मल की हत्या हो गई। इस डाके के अपराध में एक अमीर लड़की सुधा का मित्र अरुण पकड़ा गया। अरुण को बचाने और असल केस की छानबीन करने के लिये सुधा ने चेलाराम डिटेक्टिव ७०७ की सेवायें प्राप्त कीं। सुधा की कोठी पर चेलाराम की मुलाकात एक युवक विमल प्रकाश से हुई। सुधा के पिता की मरते समय यह अंतिम इच्छा थी कि सुधा विमल प्रकाश से विवाह कर ले। सुधा की लम्बी-चौड़ी जायदाद और फैक्ट्रियों और मिलों की देख-भाल उसके अंकल कर रहे थे।

डाके के अपराध में पकड़ा जाने वाला अरुण हाकी का बहुत अच्छा खिलाड़ी था। सुधा को खेलों से बड़ा लगाव था, इसी कारण अरुण से उसकी मित्रता हो गई।

छानबीन के समय डिटेक्टिव चेलाराम इस नतीजे पर पहुंचा कि करोड़ों की जायदाद और मिलों, फैक्ट्रियों को हड़पने के लालच में सुधा के अंकल ने कोई चाल चल कर हाकी प्लेयर अरुण को फंसाया है। चेलाराम ने अंकल के कोठी से बाहर निकलने पर पाबन्दी लगा दी, तभी उसे पता लगा कि अंकल कोठी से गायब हो गये हैं और एक पत्र द्वारा अपने अपराध को स्वीकार करते हुए उन्होंने चेलाराम को मार डालने की धमकी दी है। इस घटना की सूचना देने के लिये विमल प्रकाश को पुलिस स्टेशन भेजा गया और चेलाराम और अरुण हाकी की टीम के दूसरे खिलाड़ियों का पता लगाने के लिये दिल्ली गेट की ओर चल दिये।

दिल्ली गेट पहुंचने पर एक नौजवान ने हाकी से चेलाराम पर हमला कर दिया, पर अपनी ही झोंक में एक खम्बे से टकरा कर बेहोश हो गया। चेलाराम ने उसकी हाकी उठाई तो वह अन्दर से थोती थी। उसका मुठ खोल कर देखा तो हाकी के अन्दर से हीरों का वह हार निकल आया जो जौहरी की दूकान से चुराया गया था। चेलाराम और सुधा अभी सम्भलने भी न पाये थे कि उन्होंने देखा, हाकी की पूरी टीम ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया था।

हो सकता है हार और हाकी पर बने उंगलियों के निशानों से कोई राज खुले ।

मेरा नाम हमीद है । मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरा और मेरे साथियों का किसी अपराध से दूर का भी सम्बन्ध नहीं ।

पर लोगों ने डाके के समय तुम्हें वहां देखा है । ठीक इन्हीं कपड़ों में जो तुम इस समय पहने हुये हो ।

नौलखा हार मिल गया, पर हाकी से हमला करने वाला हाथ से निकल गया । मेरी समझ में नहीं आता कि हमें सूचना दिये बिना तुम दिल्ली गेट के इलाके में छानबीन के लिये गये ही क्यों ?

बिना सूचना दिये ? क्या मतलब ?? मैं सुधा के होने वाले मंगेतर विमल प्रकाश को सूचना के लिये यहीं इसी पुलिस स्टेशन के बाहर गाड़ी से उतार कर गया था ।
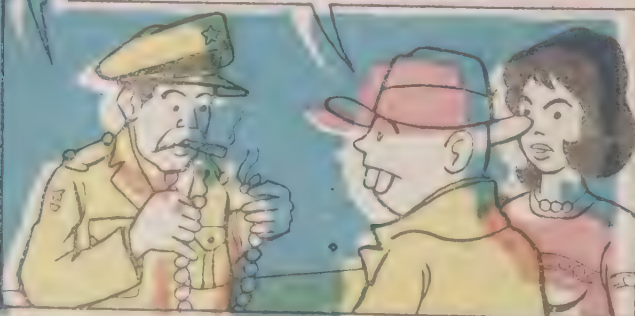
पर यहाँ तो विमल प्रकाश नाम का कोई आदमी नहीं आया । एक टेलीफोन आया था कि तुम मायापुरी में कुछ अपराधियों का पीछा करने जा रहे हो । हमने उस इलाके की पुलिस को सतर्क कर दिया था ।
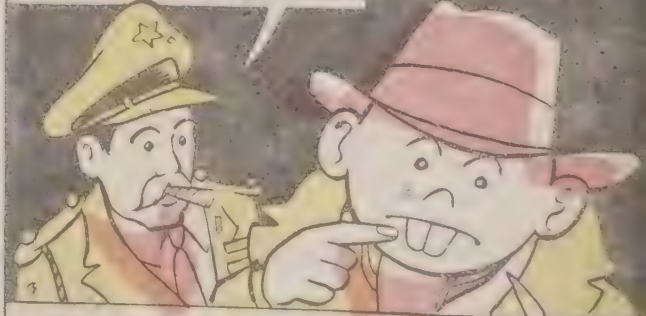
मैं दिल्ली गेट गया । और किसी ने सूचना दी मायापुरी की ? पुलिस का ध्यान असल जगह से हटा दिया ? यह धोखा किसने दिया ? विमल प्रकाश यहां आया ही नहीं ।

तभी हमीद ने देखा, उसकी शकल जैसा एक आदमी खिड़की से झांक रहा था ।
मैं यहाँ भी बैठा हूं । और मैं बाहर भी हूं । मैं दोनों जगह हूं ? यह क्या गड़बड़ है ?
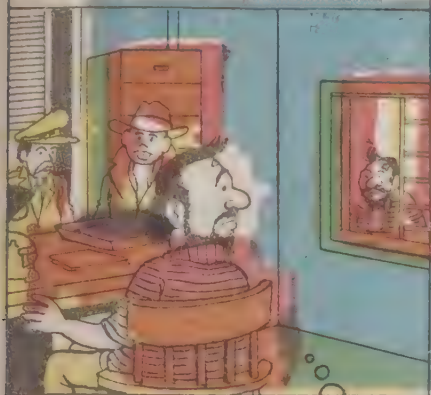
अच्छा तो मैं चलूं इन्स्पैक्टर साहब ?
हां, तुम जा सकते हो । जरूरत पड़ी तो हम तुम्हें बुला लेंगे ।

हमीद तुरन्त ही पुलिस स्टेशन से बाहर आ गया ।
मैं अन्दर भी हूं ? मैं बाहर भी हूं ? मैं एक हूं या दो हूं ?

दूसरा हमीद अब तक पुलिस स्टेशन की खिड़की से अन्दर झांक रहा था ।
अभी तो थी कहां गया ?
मैं बताऊं कहां गया ?

हां बताओ कहां गया । अभी तो यहीं था वह हमीद का बच्चा ।

ब ब ब ....
बच्चा–

एक हाथ में ही हड्डियों का सुरमा हो गया । नकल फिर नकल होती है ।

हमीद के चेहरे पर चढ़ा प्लास्टिक का गिलाफ चेलाराम की नजरों से छुपा नहीं रह सका। गिलाफ उतार कर देखा तो··

अरे यह तो हमीद के भेस में कलकत्ता जेल से भागा अपराधी भालू है। हमीद बन कर अब तक हमें धोखा दे रहा था।
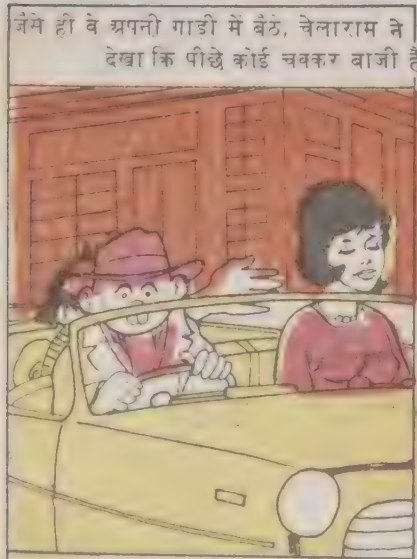
चेला राम के पास अब उनके कहे अनुसार गाड़ी उनके ठिकाने की ओर ले जाने के अलावा और कोई चारा न था।

एक नकली हमीद तो हमने पकड़ लिया है। वह दूसरा कौन है?

गाड़ी अपहरण कर ली! हमीद ने! हमने अपनी आंखों से देखा। वह हमीद था।
POLICE
हां वह हमीद ही था।
हां, गाड़ी को भागते हुए देखने वालों का कहना भी यही है कि गाड़ी लाल बंगले की ओर गई है।

पुलिस की गाड़ियाँ उनके पीछे लग गईं। वायरलैस पर उन्हें हैडक्वार्टर से संदेश मिल रहे थे।
हमीद के भेस में बेहोश अपराधी की जेब से लाल बंगले का पत निकला है।

गाड़ी यहीं रोक दो। और नीचे उतर जाओ।
तुम कौन हो? चाहते क्या हो?

चुप रहो, एक शब्द भी बोले ना गोली मार दूंगा।

यह क्या गाड़ी के साथ खाई में गिर कर आत्महत्या कर रहा है?
जैसे ही गाड़ी खाई की ओर लुढ़की
DL
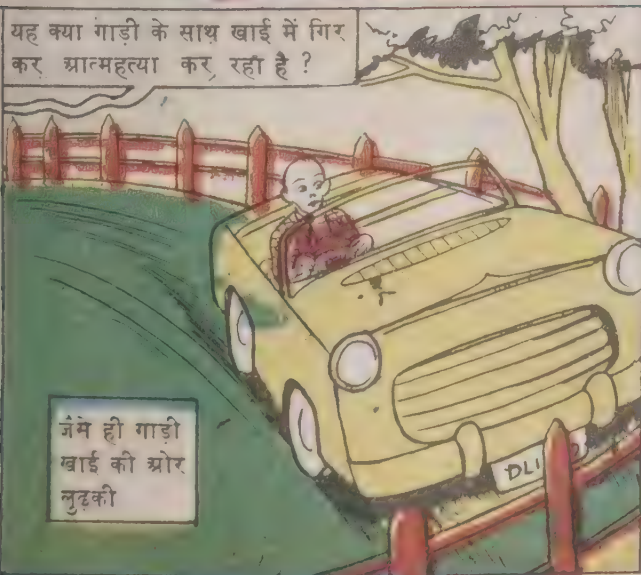
वह आदमी पेड़ की एक डाल से लटक गया।

और गाड़ी सैंकड़ों फुट नीचे खाई में लुढ़कती चली गई ।
पहले से बनाई योजना के अनुसार, एक और गाड़ी वहां खड़ी थी ।
चलो इसमें बैठो ।
अब पुलिस के फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि तुम्हारा क्या बना ।
ठिकाने पर पहुंचे तो उनके सामने अजीब दृश्य था
यह कबूतर भी आ गये पिंजरे में ?
इनकी 'मेहमाननवाजी' में देर मत करो । जरा लोहे के सरिये लाओ गर्म करके ।
दूसरी ओर पुलिस चक्कर में थी ।
गाडी खाई में लुढ़क गई ।
कोई भी जीवित नहीं बचा होगा
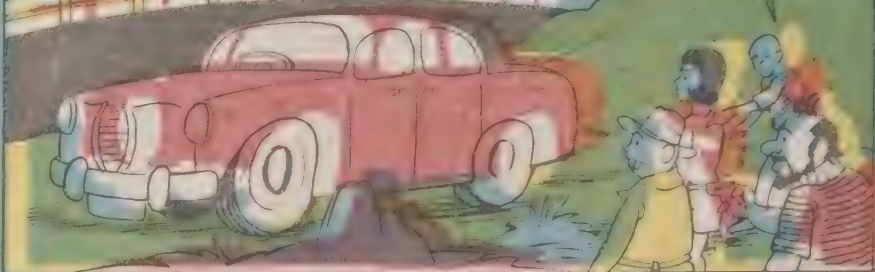
मोटू पतलू
बड़ा प्यारा कुत्ता है, कहां से मिला ?
यहां गली में से पकड़ा है, घसीटा राम के घर पहुंचाने जा रहे हैं, वह पाल लेगा ।

तुम यहां क्या कर रहे हो मेरे घर में ?
तुम्हारे लिये एक साथी लाये हैं ।

यह कुत्ता ! मेरा साथी !!
बड़ी ऊंची नसल का है, पाल लो बेचारे को ।

क्या घोड़े बेच कर सो रहा है, जैसे इसके बाबा का घर है ।
अपने घर को इसके बाबा का घर कह कर रिश्ता तो ठीक जोड़ा है तुमने ।

ले जाओ । दफा हो जाओ, मुझे नहीं पालना है कुत्ता ।

मोटू-पतलू जैसे ही बाहर निकले उन्हें कुत्ते के प्रशंसक मिल गये ।
कितना प्यारा कुत्ता है ! बेच रहे हो तो दो सौ रुपये में हमें दे दो ।
बेच दिया, निकालो रुपये ।

पहचान लिया है ना ? असली तिब्बत शेफर्ड डाग ही है ?
लगता तो असली है
क्या बात है ? किस बात पर खुश हो ?
कुत्ता बिक गया.
पूरे दो सौ रुपये में । नायाब चीज थी, बड़ी ऊंची नसल का था ।
और इसके बाद घसीटा राम जी ने सारी गली के कुत्ते पकड़ने शुरू कर दिये ।
चल मेरे भाई तुझे मक्खन टोस्ट खिलाऊंगा, मौसमी का जूस पिलाऊंगा । तू क्या बहुत ही ऊंचो नसल का है जो इतने नखरे कर रहा है ?
मुझे क्या ऊंची नसल मिल नहीं सकती । आदमी का रेट घट रहा है और कुत्तों के रेट बढ़ रहे हैं, मैं अपना पूरा घर भर लूंगा कुत्तों से ।
कुछ ही दिनों में खबर दूर-दूर तक फैल गई कि घसीटाराम का घर कुत्तों का चिड़िया घर बन गया है, मोटू-पतलू, डा० झटका और नैन सुख उससे मिलने गये तो···
कोई कुत्ता खरीदने वाला शौकीन हो तो उसे लाओ ना यहां
जो हमसे कुत्ता खरीद कर ले गये थे, उनसे बड़ा झगड़ा हुआ । उन्होंने यह कह कर कुत्ता सड़क पर छोड़ दिया कि यह तो जंगली है, इतने अच्छे कुत्ते का यह हाल है तो तुम्हारे गली के आवारा कुत्तों को कौन घास डालेगा ।
तो फिर मुझे घास डाल दो, मेरे पास खाने को कुछ नहीं बचा है इस चक्कर में ।
कमाल की बात यह है कि यह जो कुत्ता पालना नहीं चाहता था वह यहीं पल रहा है और अपनी पूरी बिरादरी के साथ ।
खाने के लिये तो शायद इसके पास भी कुछ ना बचा है जो तुम्हें लालीपाप की तरह चाट कर गुजारा चला रहा है ।

कुमार चक्रपाणि मिश्रा—दुर्ग

प्र० : आज तक दो (Duck चश्मियों या दोनों पारियों में शून्य) पर आउट होने वाले खिलाड़ी कितने हैं कृपया उनके नाम भी बतायें ?

उ० : एक दो चश्मियों पर आउट होने वाले खिलाड़ियों की सूची बहुत लम्बी है। अतः हम सबका नाम यहाँ देने में असमर्थ हैं। दो चश्मियां १३४ अवसरों पर टैस्ट इतिहास में बनी हैं, इनमें ८७ खिलाड़ी इंग्लैण्ड के, ७० दक्षिण अफ्रीकी, ६८ वेस्ट-इंडीज के, १८ न्यूजीलैंड के, ६ पाकिस्तानी तथा १२ भारतीय खिलाड़ी हैं। भारतीय चश्मेधारी खिलाड़ियों के नाम हैं; हजारे, रामचन्द, पंकज राय, जोशी, गडकरी, तम्हाने, सुरेन्द्रनाथ, रमाकान्त देसाई, दिलीप सरदेसाई, जयसिम्हा, प्रसन्ना तथा फारुख इंजीनियर।

दो बार दो चश्मियों पर आउट होने वाले ११ खिलाड़ी हैं, एलैक बेडसर, डैनिस-स्मिथ (इंग्लैण्ड), कैनमैके, ग्राहम मैकेन्जी, जोहनी ग्लैसन, बेन क्लार्क (आस्ट्रेलिया), टैकरेड, मैकमिलन, क्रिस्प (दक्षिण अफ्रीका), सी० ए० रोच तथा वैलेन्टाइन वेस्ट इंडीज। आश्चर्य की बात यह है कि इस वर्ग में भारत, पाकिस्तान व न्यूजीलैण्ड का कोई खिलाड़ी नहीं है।

तीन बार दो चश्मियों पर आऊट होने वाले खिलाड़ियों की संख्या चार है, भारत के बिशन बेदी, इंग्लैंड के आर० पील व डेरेक अन्डरवुड तथा न्यूजीलैंड के बॉब ब्लेयर।

चार बार दो चश्मियों पर आउट होने वाला विश्व में एक ही खिलाड़ी है। वही चश्मियों का विश्व रिकार्ड होल्डर है और ध्यान से पढ़िये वह महान खिलाड़ी और कोई नहीं अपने ही देश के हैं। वे हैं भागवत चन्द्रशेखर प्रसिद्ध फीक गुगली बॉलर! उनके चश्मियों का ब्यौरा इस प्रकार है पहला चश्मा विरुद्ध न्यूजीलैंड १९७५-७६ ऑकलैंड, दूसरा चश्मा विरुद्ध इग्लैंड १९७६-७७ दिल्ली तथा तीसरा व चौथा चश्मा विरुद्ध आस्ट्रेलिया १९७७-७८ ब्रिस्बेन तथा मेलबोर्न।

चन्द्रशेखर के इन चार चश्मों में से एक शाही चश्मा है! शाही चश्मा अर्जित करने वाला विश्व में केवल एक और खिलाड़ी है वह है दक्षिण अफ्रीका के कॉलिन वैंजले। अब आपको यह भी बता दें कि शाही चश्मे क्या होते हैं? दोनों पारियों में जब बैटसमैन बैटिंग के लिए आते ही पहली ही गेंद पर आऊट होता है तो उसे शाही चश्मे माना जाता है।

(इस प्रकार दो चश्मियां अर्जित करने वाले कुल १५० खिलाड़ी हैं)।

पंकज राय तथा न्यूजीलेंड के मिलर दोनों ने लगातार चार-चार शून्य अर्जित किये लेकिन केवल एक जोड़ी को छोड़ बाकी दो भिन्न-भिन्न टैस्टों में अर्जित किये गये अतः उन्हें चश्मियाँ नहीं माना जाता।

जिन्होंने एक से अधिक बार चश्मियां बनाई हैं उनमें से केवल तीन ही ऐसे हैं जिन्होंने लगातार दो टैस्टों में बनाये हैं। वे इंग्लैंड के आर० पील, दक्षिण अफ्रीका के क्रिस्प तथा आस्ट्रेलिया के बेन क्लार्क।

दिलीप कुमार गोकलानी—ब्यावर

प्र० : आस्ट्रेलिया के दौरे पर गवास्कर ने कुल कितने शतक बनाये थे ?

उ० : तीन।

सैयद अब्दुल जब्बार—बीकानेर

प्र० : मौ० अली इस बार कैसे हार गया ?

उ० : एक न एक दिन हर खिलाड़ी की हार होनी है।

प्रेमकुमार कानूगा—अहमदाबाद

प्र० : भारतीय क्रिकेट टीम में कोई तेज गेंदबाज क्यों नहीं है ? भारतीय क्रिकेट बोर्ड क्या तेज गेंदबाज के लिए प्रशिक्षण नहीं देता है ? भारतीय क्रिकेट टीम की क्या कमजोरियां हैं वह कैसे दूर हो सकती है ?

उ० : भारत के पिच तेज गेंदबाजों के अनुकूल नहीं हैं—वे स्पिन के लिए बनाए जाते हैं। अतः तेज गेंदबाज कोई बनना ही क्यों चाहेगा ! पिच अनुकूल न होने के कारण उसे विकेटें नहीं मिलेंगी। विकेटों के न मिलने के कारण उसका क्रिकेट जीवन अंधकारमय हो जायेगा। जब तक भारत में तेज पिच तैयार नहीं किये जाते तब तक तेज गेंदबाज पैदा नहीं होंगे ! क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड केवल खाली बातें ही बनाता है ठोस कुछ नहीं करता ! भारत में इस समय तेज गेंदबाज बनना ऐसे ही होगा जैसे रेगिस्तान में रेन कोटों की दुकान खोलना।

जोरो शर्मा—मुखर्जी पार्क

प्र० : क्या जूडो और कराते एक खेल है, दिल्ली में ये कहाँ सिखाया जाता है तथा इसे सीखने के लिए क्या कार्य-विधि करनी पड़ती है ?

उ० : कृपया दीवाना का पिछला अंक देखें। उसमें जिनसे सम्पर्क किया जा सकता है उनका पता छपा है।

चंद्रशेखर जागिड़—वीर दुर्गादास नगर

प्र० : मोहन बागान की टीम के सदस्य व कप्तान कौन हैं ?

उ० : गोल—शिवाजी बैनर्जी

रक्षक—श्यामल बैनर्जी, सुब्रतो भट्टाचार्य, प्रदीप चौधरी, दिलीप पलित।

मिड फील्ड—प्रसुन्न बैनर्जी (कप्तान), गौतम सरकार व हबीब।

फारवर्ड—सुभाष भौमिक, श्याम थापा, अकबर बिदेस बोस, (हबीब अग्रिम पंक्ति में भी खेलते हैं।

पुरषोत्तम—लुधियाना

प्र० : आप यह बताइये कि मुझे क्रिकेट खेलने का बहुत शौक है। और मैं क्रिकेट का टैस्ट खिलाड़ी बनना चाहता हूं। मुझे यह बतायें कि मैं पहले किस क्लब की तरफ खेलूं ! जहाँ कि मुझे मैच खेलने का अवसर मिले। लेकिन मैं पढ़ता नहीं हूं ! दुकान पर ही हूं।

उ० . आपने अपनी आयु नहीं लिखी है ! उसके बगैर कुछ कहना कठिन है।

खेल-खेल में

दीवाना

८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग

नई दिल्ली ११०००२

हाकी कैसे खेलें

हाकी खेल का इतिहास

हाकी का खेल सर्दियों में खेला जाता रहा है। इस खेल की शुरुआत कब और कहाँ हुई, यह ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता। लेकिन नील नदी की घाटी (मिस्र) में प्राप्त हुए एक प्राचीन रेखा-चित्र से यह तो विदित हो ही जाता है कि हाकी खेल लगभग चार हजार वर्ष पुराना है। लेकिन उस समय उसका रूप भी भिन्न था। मिस्र में मिले इस रेखा-चित्र में दो खिलाड़ियों को पतली, आगे से मुड़ी हुई छड़ियों से 'बुली' करते दिखाया गया है।

हाकी खेल का एक प्राचीन प्रमाण एथेंस नगर (यूनान) की सीमा दीवार पर खुदे एक भित्ति-चित्र द्वारा भी मिलता है। यह चित्र १६२३ में प्राप्त हुआ था। यह चित्र संगमरमर के पत्थर पर कलात्मक ढंग से खुदा हुआ है और इसमें कई खिलाड़ी हाकी खेलते दिखाये गए हैं। यह चित्र ईसा से लगभग ४६० वर्ष पूर्व का माना जाता है।

जापान में प्राचीन काल से ही खेले जाने वाले—'कांची' तथा 'डक्यु' हाकी के खेल से मिलते-जुलते खेल हैं। दक्षिणी अमरीका में 'चौका' नामक प्राचीन खेल भी हाकी खेल से समानता रखता है।

आधुनिक हाकी का खेल निस्संदेह इंग्लैंड की ही देन है, इसमें दो राय नहीं हैं। क्योंकि आधुनिक हाकी खेल का यूरोप तथा एशिया में इंग्लैंड ने ही प्रचार किया था। ऐतिहासिक प्रमाणों ने भी यह सिद्ध किया है कि हाकी खेल की शुरुआत इंग्लैंड में १६वीं सदी में हो चुकी थी। तब इसका रूप अवश्य भिन्न था।

कुछ विद्वानों की राय में हाकी शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा के शब्द 'हाकिट' से हुई है—जिसका अर्थ होता है गड़रिए की छड़ी या कांटा छड़ी—जो एक सिरे से थोड़ी मुड़ी हुई होती है ताकि गड़रिया भेड़-बकरियों को उसके मुड़े हुए सिरे से उनकी गर्दन या टांग फंसा कर उन्हें रोक सके।

हाकी इंग्लैंड का सबसे प्राचीनतम खेल माना जाता है। ब्रिटिश म्यूजियम में एक वस्त्र पर प्राचीन यूनानी हाकी का चित्र अंकित है। हाकी से मिलता-जुलता 'बाडी' नामक खेल इंग्लैंड में प्राचीनकाल में बहुत लोकप्रिय था। इस खेल का उल्लेख शेक्सपियर के नाटक 'रोमियो एण्ड जूलियट'

में भी मिलता है।

सन् १८७५ में इंग्लैंड में 'प्रथम हाकी कांफ्रेंस' का आयोजन किया गया जिसमें हाकी खेलने के कई नियम बनाये गए। हाकी खेल को लोकप्रिय बनाने के लिए कई तरह का सुधार किया गया। इस प्रकार हाकी को धीरे-धीरे वर्तमान विकसित रूप मिल गया और आज की तथा पुरानी हाकी खेल की पद्धति में जमीन-आसमान का अन्तर है।

सन् १६४५ तक संसार के २० देशों में हाकी का खेल अपना विशिष्ट स्थान बना चुका था। और उन देशों में हर शहर में लोकप्रिय हो चुका था। और आज लगभग साठ देश ऐसे हैं जहाँ हाकी का खेल अपनी लोकप्रियता के शिखर पर है और उन देशों को 'इंटर नेशनल हाकी फेडरेशन' से मान्यता प्राप्त है।

सन् १६०८ के ओलम्पिक खेलों में पहली बार हाकी खेल को शामिल किया गया। पहली और दूसरी बार इंग्लैंड के सिर पर ही हाकी की विजय का सेह[illegible] बंधा। इसके बाद १६२८ के ओलम्पि[illegible] खेलों में भारत ने हाकी प्रतियोगिता [illegible] हिस्सा लिया और 'विजय श्री' का वि[illegible] हाकी सिरमौर इंग्लैंड के सिर से उतर [illegible] भारत के शीश की शोभा बना। हाला[illegible] यह और बात थी कि १६२७ के ओलम्पि[illegible] हाकी प्रतियोगिता में इंग्लैंड ने भाग न[illegible] लिया था। लेकिन अगली ओलम्पिक हा[illegible] प्रतियोगिता में इंग्लैंड के मौजूद होते हु[illegible] भी भारत के सिर से 'विश्व हाकी सिरमौ[illegible] का खिताब न छीन पाया और हमने हा[illegible] खेल पर अपना पूरा अधिकार कर लिया [illegible]

भारत में हाकी कब आई

भारत में हाकी को लाने वाला इंग्[illegible] ही है। भारत में अंग्रेजों के आगमन से [illegible] हाकी खेल का प्रारम्भ हुआ। वैसे हम[illegible] प्राचीन ग्रंथों में 'कंदुक क्रीड़ा' खेल का उल्[illegible] मिलता है। कवि कालिदास ने अपनी र[illegible] नाओं में महलों के उद्यानों में स्त्रियों द्[illegible] छड़ी की सहायता से गेंद खेलने का व[illegible] किया है।

भारत में हाकी का व्यापक प्रच[illegible] बंगाल में सन् १८८५ से आरम्भ हुआ[illegible] कलकत्ता हाकी खेल का पहला गढ़ बना [illegible] हाकी की सबसे पहली संस्था (कल[illegible] कलकत्ता में ही बनी। फिर इसका प्रच[illegible] बम्बई में हुआ और फिर तो इस लोकप्रि[illegible] खेल ने भारत के प्रत्येक शहर में अपना [illegible] बना लिया।

प्रथम अखिल भारतीय हाकी प्र[illegible] योगिता कलकत्ता में ही सन् १८६५[illegible] 'बेटन कप हाकी टूर्नामेंट' के रूप में [illegible] हुई। इस प्रतियोगिता में देश की स[illegible] प्रसिद्ध टीमों ने भाग लिया। इसके [illegible] बम्बई में 'आगा खान हाकी टूर्नामेंट' [illegible] स्थापना हुई। इसमें भी देश की बड़ी-[illegible] टीमें भाग लेती रहीं। इन प्रतियोगित[illegible] की शुरुआत से खिलाड़ियों को बड़ा प्रोत्सा[illegible] मिला और हाकी प्रतिदिन लोकप्रिय ह[illegible] चली गयी। स्कूल, कालेजों के मैदान ह[illegible] के खिलाड़ियों से भर गए। हाकी-क्लबों [illegible] स्थापनायें धड़ाधड़ होने लगीं और एक [illegible] ऐसा आया कि हम हाकी में विश्व में सर्वो[illegible] स्थान पा गए।

(क्रमशः)
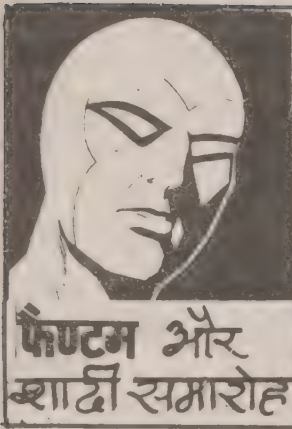
फैण्टम और शादी समारोह
घने जंगलों में शादी का आयोजन ।
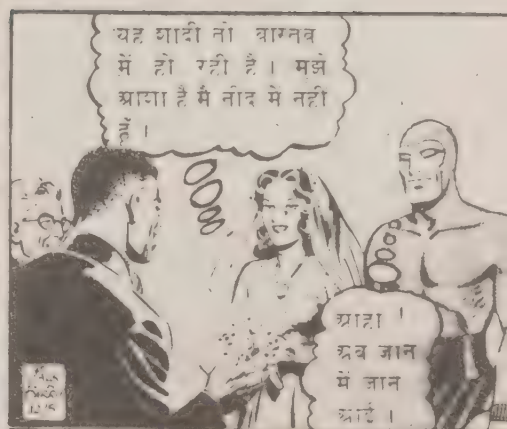
यह शादी तो वास्तव में हो रही है । मुझे आशा है मैं नींद में नहीं हूँ ।
आहा ! अब जान में जान आई ।

आइवरी-लाना राष्ट्र के मेरे सहयोगी मेरी इच्छा है कि वह मेरे पास यहाँ आयें राष्ट्रपति गोगेंडा ।

धन्यवाद राष्ट्रपति लुआगा ।
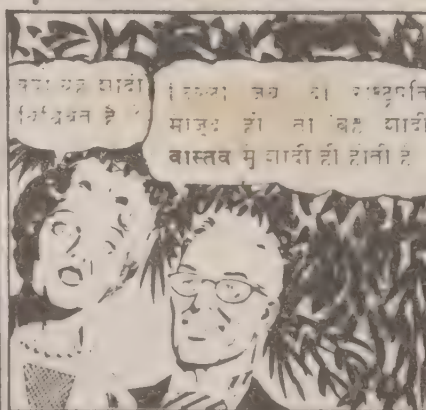
वास्तव में शादी ही होती है

तुम दोनों बचपन से एक दूसरे को बहुत चाहते हो, मुझे आशा है तुम दोनों एक दूसरे को प्यार से रखोगे और दुःख में, सुख में एक दूसरे का साथ दोगे ।
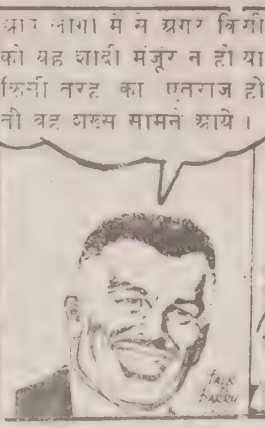
आप लोगों में से अगर किसी को यह शादी मंजूर न हो या किसी तरह का एतराज हो तो वह शख्स सामने आये ।
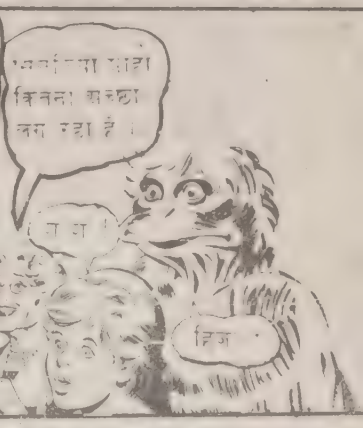
और तुम दोनों अपने वंश को आगे बढ़ाओगे और अपने बड़ों के पद चिन्हों पर चलोगे ।

गर्रर्रर्र
गर्रर्रर्र

वो तीर जहरीले हैं देखें कौन सामने आता है…

दीवाना वर्ग पहेली 10 रु० इनाम जीतिये

बायें से दायें

१. एक पुरुषोत्तम एक्टर जिसमें कर्फ्यू का गुण है ? (३-२)
५. सुई के काम में पानी डाल आँखों को सजा ? (३)
६. दयालु की पार्टी छीन लो ? (२)
८. एक प्रदेश जिसमें बीच में मेल होता है ? (५)
१०. राक्षसी जो पैगम्बर बनते-बनते रह गयी ? (३)

अन्तिम तिथि -- ७-१०-७८

ऊपर से नीचे

१. एक पुरानी फिल्म जिसका अच्छा हुआ कि हमने नजारा नहीं देखा ? (४)
२. इसे करने के लिये देश चलाना पड़ता है ? (२)
३. एक भाषा जिसे बोलने के लिये शुरू में रगड़ अथवा अंत में उसका उल्टा— (५)
६. गड़गाई में छिपा (२)
७. उल्टे अंग्रेजी में देखो अब. वास्तव में यह एक संख्या है । (३)
९. बे सिर पैर का अभिनेता चोटी का (२)

पहचानिये प्रतियोगिता

5 रु पुरस्कार जीतिये

चित्र में दिखाये गये चारों चित्रांकनों को देख हमें बताइये कि ये क्या है ?

अन्तिम तिथि 10...
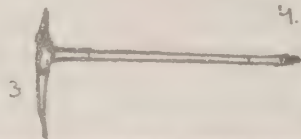
इनाम 5 रु०

दाढ़ी प्रतियोगिता

दाढ़ी रखने के दस दीवाने लाभ बताइये—सबसे अनोखे दीवाने लाभ बताने वाले प्र[illegible] को पुरस्कार ।

अन्तिम तिथि -- ७-१०-७८

प्र० : होवर क्राफ्ट का निर्माण कब और कैसे हुआ तथा उसके निर्माता कौन थे ? - राजेश अल केसवाणी, अहमदाबाद

उ० : जल का यातायात पृथ्वी की अपेक्षा काफी धीरे चलता है क्योंकि जल यान को पानी की प्रतिरोध शक्ति का भी सामना करना पड़ता है। सन १६५५ में ब्रिटिश इन्जीनियर श्री क्रिस्टोफर कोकरैल ने इस कठिनाई पर विजय पाने के लिये एक ऐसे यान का निर्माण किया जो पानी की सतह पर हवा का कुश्न बनाकर चलाया जा सके। होवर क्राफ्ट बहुत ही आसानी से पानी की सतह पर एयरकुशन पर चलाया जाता है। होवर क्राफ्ट न केवल पानी पर बल्कि जमीन पर भी उतनी ही आसानी से चलाया जा सकता है बल्कि ऊबड़-खाबड़ स्थानों में तो इसका प्रयोग और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि इसको चलाने के लिये किसी बढ़िया पक्की सड़क की आवश्यकता नहीं होती। इसके अतिरिक्त इसे किनारे पर लगाने के लिये भी किसी प्रकार के विशेष बन्दरगाह की आवश्यकता नहीं होती। इसे पृथ्वी पर लाने के लिये एक पक्का रेम्प ही काफी होता है, पानी से रेम्प पर होवर क्राफ्ट बड़ी सरलता पूर्वक आ जाता है।

होवर क्राफ्ट के शक्तिशाली पंखे हवा को तेजी से क्राफ्ट के नीचे भरते हैं। ये हवा बाहरी सिरों पर लगे, अन्दर को मुड़े, जैटों द्वारा छोड़ी जाती है जिससे क्राफ्ट के नीचे 'एयर कुशन' बनाया जाता है इस 'एयर कर-टन' को निरन्तर हवा फेंक कर बनाये रक्खा जाता है ताकि क्राफ्ट ऊपर उठा रहे। चारों ओर से बाहर निकलने वाली हवा को बचाने के लिये, इसके चारों ओर के किनारों पर हिलने वाली, कई फुट लम्बी स्कर्ट लगायी जाती है। इस प्रकार होवर ऊंची लहरों पर भी आसनी से चलता है। इसको प्रोपेलर या जैट इंजन द्वारा चलाया जाता है।

श्री क्रिस्टोफर कोकरैल द्वारा निर्मित SRN-1 क्राफ्ट ने निर्माण के चार वर्ष बाद पहली बार इंगलिश चैनल को पार किया था। सन् १६६२ में होवर ब्रिटेन की कमर्शल सर्विस में आ गये। सन् १६६८ में एक होवर ३० कारें तथा २५० यात्रियों को आसमी से इंगलिश चैनल पार करा लेता था। हवा पर चलने के कारण होवर क्राफ्ट को 'एयरकार' भी कहते हैं। इसके बाद इसी सिद्धांत को लेकर अन्य यावों का भी निर्माण किया गया है। फांस की एक होवर ट्रेन जिसे एयरोट्रेन भी कहते हैं, मोनोरेल पर २०० मील प्रति घंटे की गति से चलती है।

प्र० : अलग-अलग मौसम समय-समय पर क्यों आते हैं ?

उ० : आदिकाल से ही मानव मौसमों के बदलने के रहस्य को जानने का इच्छुक रहा है। सर्दी में ठंड तथा ग्रीष्म ऋतु में गरमी क्यों होती है तथा बसन्त के आरम्भ से दिन बड़े क्यों होने लगते हैं तथा सर्दी की रात इतनी लम्बी क्यों होती हैं।

हम सब ही जानते हैं कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर तथा साथ-साथ अपनी धुरी पर भी तेजी से घूमती रहती है। सूर्य का चक्कर लगाते हुए भी पृथ्वी लट्टू के समान घूमती रहती है। यदि पृथ्वी की धुरी की रेखा जो की उत्तरी ध्रुव से लेकर दक्षिणी ध्रुव के बीच से जाती है, पृथ्वी का सूर्य का चक्कर लगाने वाली रेखा से मिल कर ६० डिग्री का कोण बनाती तो मौसम बदलने का प्रश्न नहीं होता तथा वर्ष का हर दिन बराबर लम्बा होता। परन्तु पृथ्वी की धुरी कई भिन्न दबावों के कारण एक ओर को झुकी हुई है। एक ओर सूर्य पृथ्वी को अपनी ओर खींचता है तथा दूसरी ओर चन्द्रमा अपनी ओर खींचता है इसके साथ-साथ तीसरा दवाब पृथ्वी के स्वयं अपनी धुरी पर घूमने का भी है। इन सब कारणों के परिणाम स्वरूप पृथ्वी एक ओर को झुक जाती है और झुकी हुई दशा में ही सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। पृथ्वी की दशा सारे वर्ष एक सी रहती है ताकि पृथ्वी की धुरी की नोक सदा एक ही दिशा या ध्रुव तारे की दिशा में ही रहे। इसका अर्थ हुआ कि वर्ष के कुछ भाग में उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर को झुका होता है तथा दूसरे भाग में सूर्य से दूर को झुकता है। इस झुकाव के कारण सूर्य की किरणें कभी भूमध्य रेखा के उत्तर की ओर सीधी पड़ती हैं तो कभी भूमध्य रेखा के दक्षिणी हिस्से पर सीधी पड़ती हैं। सूर्य की सीधी किरणों के इस अन्तर के कारण ही संसार के भिन्न-भिन्न भागों में मौसम अलग-अलग होते हैं।

सूर्य की सीधी किरणें जब उत्तरी गोलार्ध पर पड़ती हैं तो इस ओर के देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है तथा इस समय दक्षिणी गोलार्ध की ओर के देशों में शीत ऋतु होती है। इसी दक्षिणी गोलार्ध पर जब सीधी किरणें पड़ती हैं तो इस ओर के देशों में ग्रीष्म तथा दूसरी ओर स्थित देशों में शीतऋतु होती है। सूर्य की ओर या दूर होने के कारण ही दिन लम्बे व छोटे हो जाते हैं। वर्ष में केवल २३ सितम्बर तथा २१ मार्च ही ऐसे दो दिन होते हैं जो संसार भर में सदा बराबर होते हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चना कुरमुरा

मालिक ने क्रोध में भर कर नौकर से कहा—'क्या तुम यह समझते हो कि मैं बेवकूफ हूँ ?'

नौकर ने जवाब दिया—यह मैं कैसे कह सकता हूं हुजूर ? मैं तो कल ही आया हूं।'

●

एक बार एक जमींदार ने अपने नौकर को किसी काम से गंगापार भेजा। रास्ते के खर्च के लिए उन्होंने उसे चार पैसे दिए और कहा—'देखो, दो पैसे गंगा पार जाने के लिए नाव वाले को देना और दो पैसे तुम खा लेना।'

नौकर चल दिया। जब कई मील चला गया और गंगा किनारे पहुंचा तो कुछ सोच कर एकदम वहाँ से लौट पड़ा। लौटकर घर आया और जमींदार के पास गया।

जमींदार उसे देखते ही बोला—'तू लौट क्यों आया ?'

नौकर—'मालिक, आपने चार पैसे दिए थे। पर यह तो बताया ही नहीं कि कौन से दो पैसे मेरे खाने के हैं और कौन से दो पैसे नाव वाले को देने के लिए दिये हैं। इसीलिए मुझे रास्ते से लौटाना पड़ा।'

विनोद खन्ना का संन्यास

और दूसरों के बारे में अटकलबाजी

हाल में ही समाचार पत्रों में पढ़ने को मिला कि प्रसिद्ध फिल्म स्टार वर्तमान फिल्में पूरी होने के बाद संन्यास ले लेंगे और आध्यात्मिक तथा फकीरी सूफी तपस्या में बाकी का जीवन बितायेंगे। इस समाचार को पढ़ते ही हमारे दिल व दिमाग में कौंधा कि शायद दूसरे स्टार भी उनका अनुसरण करेंगे और निकट भविष्य में हमें कुछ ऐसे समाचार पढ़ने को मिलेंगे

सुनील दत्त का फिल्मों से सन्यास

अब वे चम्बल डाकुओं से आत्म-समर्पण करवाने के लिये सर्वोदय कार्य कर्ताओं से मिल कर कार्य करेंगे।
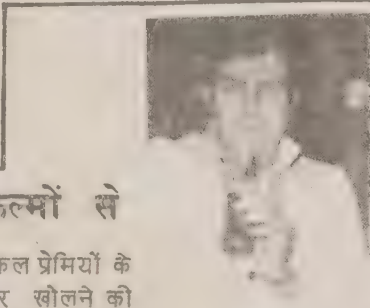
संजीव का फिल्मों से सन्यास

संजीव कुमार अब असफल प्रेमियों के लिये सलाहकार दफ्तर खोलने की योजना बना रहे हैं।

सिम्पल का त्याग पत्र

सिम्पल ने घोषणा की है कि वे अब फिल्मों में काम नहीं करेंगी। उनका इरादा बम्बई में एंटी फिल्म मोर्चा बनाने का है। जिसके सदस्य रेलवे स्टेशनों पर फिल्म स्टार बनने आये युवक-युवतियों से वापिस घर जाने का अनुरोध करेंगे।

हेमा का सन्यास

हेमा ने फिल्मों से संन्यास लेने का निर्णय लेते हुए बताया कि वे अब जाटों के नेता चौधरी चरण सिंह के दल में शामिल होकर चुनाव लड़ेंगी।

चिन्टू और नीतू का फिल्मों से सन्यास

उपरोक्त दोनों कलाकारों ने फिल्में त्याग बनजारों की टोली में शामिल होकर घुमन्तू जीवन बिताने का प्रण कर लिया है।

राजकपूर का फिल्मों से सन्यास
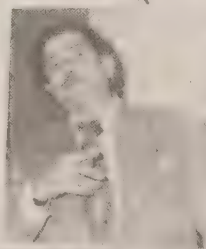
राजकपूर ने फिल्मों से संन्यास की घोषणा करते हुए अपने भविष्य के बारे में बताया कि वे जीनत अमान के बॉडी गार्ड की नौकरी करेंगे।

डिम्पल का गृह मंत्रालय से त्याग पत्र

डिम्पल ने दोबारा फिल्मों में काम करने का निश्चय किया है।

देवानन्द का त्याग पत्र

प्रसिद्ध अभिनेता देवानन्द अब फिल्में छोड़ 'बुढ़ापे में जवानी' नामक ताकत की दवा बनाने वाली कम्पनी के ट्रेवलिंग सेल्ज एजेन्ट बनने का निर्णय कर चुके हैं।
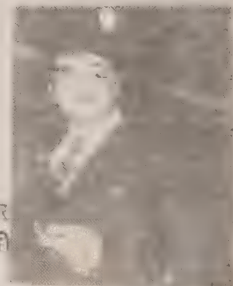
रणधीर का सन्यास

अखिल भारत फैटसो क्लब रणधीर कपूर को अपने यहां गेटकीपर की नौकरी प्रदान करेगा।

शशिकपूर का फिल्मों से सन्यास

प्रसिद्ध फिल्म स्टार शशिकपूर अब पर्दे पर नहीं दिखाई देंगे। शशि दम्पत्ति अब अपना सारा समय देश में घूम-घूम कर दोपहर के खाने के साथ बियर पीने की महत्ता और आवश्यकता का प्रचार करेंगे।

रामेश्वरी का फिल्मों से सन्यास

अभिनेत्री रामेश्वरी अब भारत में दुल्हनों की समस्याओं पर राष्ट्रीय स्तर पर रिसर्च करेंगी।

शोभा आनन्द का सन्यास

(शोभा द्वारा फिल्में छोड़ने की घोषणा किये जाने पर लोगों ने पूछना शुरू किया है कि वे फिल्मों में आयी ही कब थीं)।

जीनत अमान का त्याग पत्र

जीनत अमान ने अब और फिल्मों में काम न करने का फैसला किया है। वे अब राजकपूर के फार्म से आये गन्ने का रस पेल कर बेचने का धंधा करेंगी।

राजेश खन्ना ने फिल्मों से सन्यास लिया

अब राजेश खन्ना अपना सारा समय बच्चों की देखभाल में लगाना चाहते हैं। उनकी पत्नी अभिनेत्री डिम्पल के पी० ए० का भी वही काम करेंगे।

अमिताभ बच्चन फिल्मों से नाता तोड़ेंगे

अमिताभ बच्चन फिल्मी दुनिया त्याग रहे हैं। अब वे 'बदला गाइडेंस ऐजेन्सी' खोल रहे हैं जिसमें वे बदला लेने के इच्छुक सज्जनों को बदला लेने के तरीकों पर सलाह देंगे।

शर्मिला का सन्यास

शर्मिला फिल्में छोड़कर अपने लड़के को क्रिकेट के खेल का प्रशिक्षण देने में पति का हाथ बटायेंगी। उन्हें नैट प्रैक्टिस के दौरान बॉलिंग करनी पड़ेगी और पटौदी बेटे को बैटिंग के तकनीक सिखायेंगे।

परवीन बाबी का फिल्मों से त्याग पत्र

अभिनेत्री परवीन बाबी फिल्मों को त्याग अब भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन का नेतृत्व करने की योजना बना रही हैं।

राजकुमार का सन्यास

राज कुमार ने फिल्मों से संन्यास लेने की घोषणा की है। वे बाकी जीवन अपनी पुलिस नौकरी के समय का जमा प्राविडेन्ट फंड लेने की लड़ाई में लगायेंगे। उनका ३८५ रु० ८७ पैसे पी० एफ० में जमा है।

विनोद मेहरा फिल्मों से इस्तीफा

विनोद मेहरा अब फिल्मों में काम नहीं करेंगे। विनोद की बीबी भेलपूरी बनाना जानती है। अतः विनोद चौपाटी पर भेलपूरी की रेहड़ी लगायेगा।

राखी फिल्मों से सन्यास

राखी फिल्में छोड़ कर तीसरे पति की तलाश करेंगी। पति मिलने पर फिर पति से लड़ कर फिल्मों में लौट आयेंगी।

जाहिरा, पद्मिनी कपिला व कोमिला वर्क

इन अभिनेत्रियों ने संयुक्त बयान में फिल्मों से अलग होने की बात कही है। तीनों रेलवे रिजर्वेशन काउंटरों पर बुकिंग क्लर्कों की नौकरियों के लिए एप्लाई कर रही हैं।

अच्छी सर्विस

जगदीश पाठक

बात उन दिनों की है जब मैं झुमरी तलैया से ट्रांसफर होकर यहां नया-नया आया था। नया शहर था, नए साथी थे, नई बातें थीं। पुरानी थी तो सिर्फ धर्म-पत्नी। उसके अलावा हमारे आँगन में परिवार नियोजन की अफवाहों की कृपा से बच्चे के नाम पर केवल नत्थू ही खेला करता था। नत्थू के अकेले होने के कारण हमारा घर बच्चों के लंका काण्ड से मुक्त रहता था।

एक दिन मैं अपनी एकमात्र धर्म-पत्नी और इकलौते बेटे नत्थू के साथ झाड़ू खरीदने के उद्देश्य से बाजार की ओर जा रहा था। मेरी पत्नी को हास्य पत्रिकाएं पढ़ने का गहरा चाव है। वह रास्ते के एक बुक स्टाल पर खड़ी होकर 'दीवाना' के पन्ने पलटने लगी। मैं सड़क के एक किनारे पर खड़ा हो गया। नत्थू अपनी मम्मी से टाफी खरीदने की जिद करने लगा। मेरी पत्नी 'दीवाना' में ऐसी डूबी कि मैं बोर होने लगा। उसी समय मुझे सामने से अपने दफ्तर का एक साथी आता हुआ दिखाई दिया और मैंने अपने चेहरे पर मुस्कराहट पैदा करके अपना हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया। उसके साथ एक तन्दुरुस्त नौजवान और भी था, अतः मुझसे हाथ मिलाने के बाद मेरा साथी बोला—'इनसे मिलिए। मेरे दोस्त हैं मफत लाल जी। शहर की जानी-मानी हस्ती। बच्चा-बच्चा इनकी तारीफ करता है। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं।'

इतनी सारी बातें एक साथ सुन कर मैंने मफत लाल जी की तरफ अपना हाथ बढ़ाते हुए इतना ही कहा कि बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर। इसी समय मेरी पत्नी भी हाथ में 'दीवाना' लिये वहीं पर आ गई। मैंने संकेत कर दिया कि यह मेरी धर्म-पत्नी है, तो उस नौजवान ने दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। मेरी पत्नी ने भी नत्थू से हाथ छुड़ा कर नमस्ते की। मफत लाल जी नत्थू के गाल पर अपनी उंगली से तबला बजाने लगे। इतने में ही एक अन्य महाशय हम लोगों के बीच में शामिल हो गए और बड़ी गर्मजोशी के साथ हाथ मिलौवल करने के बाद मफत लाल जी से किसी क्लब के सम्बन्ध में वार्तालाप करने लगे। वार्तालाप के साथ-साथ हम लोग आगे बढ़ने लगे। कुछ देर उन्हीं लोगों के साथ घूमने टहलने के उपरान्त मैं झाड़ू खरीद कर सपरिवार अपने सरकारी क्वार्टर में लौट आया। बिदा लेते समय मफत लाल जी ने अपनी शिष्टता से हमें दुबारा प्रभावित कर दिया।

शाम को दफ्तर से लौटने के बाद चाय पीकर मैं अक्सर अपने इकलौते साहबजादे नत्थू को लेकर बाजार की तरफ निकल जाया करता था और इस दरमियान नत्थू की मम्मी अपनी फुलके सेंकने की जिम्मेदारी पूरी कर लिया करती थी। बाजार में मुझे रोज ही अपने दफ्तर के लोग मिल जाया करते थे। उन्हीं के साथ टहलते-टहलते मैं सामान भी खरीदता रहता था, अपने अनमोल रत्न नत्थू की छोटी-छोटी माँगें पूरी करता रहता था और साथ वालों की गपशप भी सुनता रहता था।

नए साथियों से होने वाली बातचीत के दौरान किसी रूप में मफत लाल जी का जिक्र जरूर आया करता था और वह अक्सर मिलते भी रहते थे। मैंने बार-बार लोगों का यही कहते सुना कि मफत लाल जी बड़े नामी

आदमी हैं। उनमें गजब का हौसला और हिम्मत है। वह कहीं पर बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। फिर भी उनकी आदत में घमंड नाम की कोई चीज नहीं मिलती। वह मिलनसार और बड़े खुशमिजाज आदमी हैं।

मैंने भी जब उन्हें पहली बार देखा था तो उनके व्यवहार से लग रहा था कि वह वाकई भले आदमी हैं। इसलिए उसके बाद वह जब कभी मुझे अकेले या दोस्तों के साथ मिले तो मैंने उनसे पहचान बढ़ाना शुरू कर दी। मुझे खुशी थी कि इस नए शहर में एक भले और सम्पन्न आदमी से मेरा परिचय बढ़ रहा है।

एक दिन हमारी ससुराल से एक पोस्ट-कार्ड पधारा। पोस्टकार्ड लिखे जाने का कारण यह था कि नत्थू की मौसी के हाथ पीले कराने की योजना में हमारा सहयोग वांछित था। मैंने इस बात को सीरियस नहीं लिया क्योंकि ये सब काम अपने ... से होते ही रहते हैं पर मेरी पत्नी ने पोस्टकार्ड को हद से ज्यादा महत्व देना ... कर दिया। उनकी हठधर्मिता के कारण ... भी मुख्य विषय पर बातचीत करनी प... और बातों-बातों में अचानक मफत लाल ... का नाम आ गया। श्रीमती जी कुछ ... करने का अभिनय करती हुई बोलीं—'व... जो उस दिन बुक-स्टाल के पास मिले थे ... मुझे तो काफी तहजीबदार लगे थे। उन... जात-बिरादरी मालूम है आपको? क... सर्विस करते हैं?'

'वह तो अपने दोस्त हैं। खाते-पीते ... के लड़के हैं। जात-बिरादरी भी अपनी ... है। सुना है कि कहीं बहुत अच्छी सर्वि... करते हैं।' मैंने अपनी जानकारी रख दी।

'तो फिर शुभ कार्य में देरी क्या है ... जल्दी-जल्दी हाथ-पाँव चलाओ, वरना इत... अच्छा लड़का हाथ से निकल जाएगा। आज ही नत्थू की मौसी को चिट्ठी डाल क... यहां बुलवा लेती हूं। शादी से पहले दोन... एक-दूसरे का मुँह देख लेंगे तो ठीक रहेगा' मेरी पत्नी एक ही सांस में कह गई।

उस दिन जब मैं शाम को बाजार ग... तो मेरी नजरें मफत लाल जी को पाने ... लिए बेताब थीं, मगर दो घंटे की लगात... तलाश के बावजूद उनके दर्शन न कर सका। खास मकसद से उत्पन्न संकोच के कारण मैं... अन्य मित्रों से कुछ नहीं पूछा पर दूसरे दि... भी जब मफत लाल जी की शक्ल नहीं दिखा... दी तो मैंने एक साथी से यूं ही कहा—'आजकल मफतलाल जी नहीं दिखाई दे र... हैं। पहले तो जिधर निकल जाओ उध... दिखाई दे जाते थे।'

मेरी बात सुन कर मेरे साथी ने पह... तो बड़े आश्चर्य से मेरे चेहरे की तरफ देख... फिर कहा—'अरे! आपको नहीं मालूम ... मफत लाल जी आजकल सिटी क्लब की तरफ से मैच खेलने बाहर गए हुए हैं।' मैं... अपनी अनभिज्ञता को नकली मुस्कान से ढक... कर छुट्टी पाई।

नत्थू की मौसी हमारी पत्नी की चिट्ठी पाते ही अपनी अम्मा के साथ हमारे क्वार्...

मदहोश
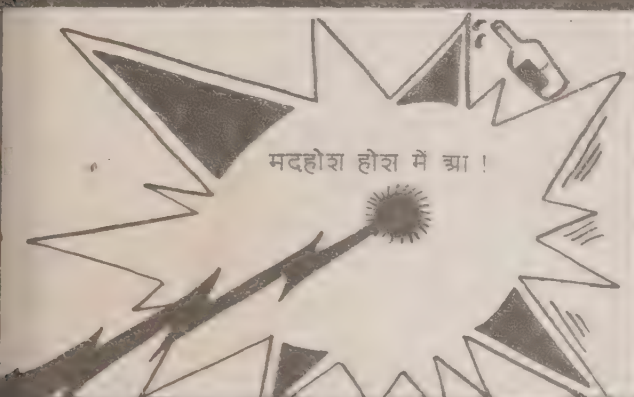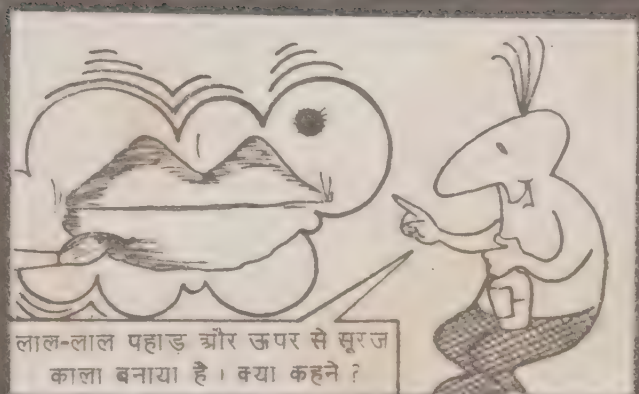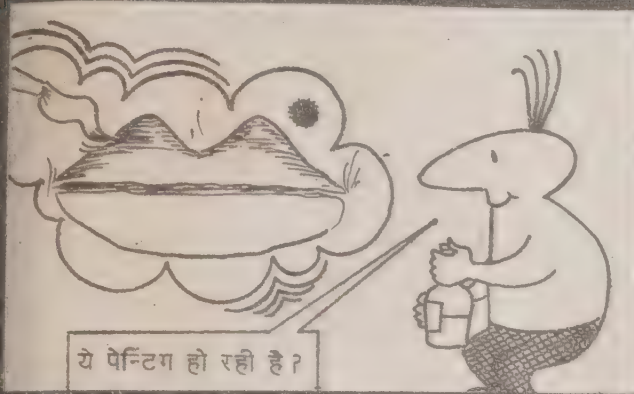
में तशरीफ ले आईं । सभी को मफत लाल जी का इन्तजार था । उनका घर मुझे मालूम नहीं था । लोगों में बात फैलाना उचित नहीं था, इसलिए चुपचाप नत्थू को लेकर हर शाम बाजार का एक चक्कर लगा लिया करता था ।

एक दिन दफ्तर से लौटते समय मुझे अपनी कालोनी में ही मफत लाल जी के दर्शन हो गए । वह किसी से मिल कर लौट रहे थे । उन्हें साक्षात देख कर मुझे इतनी प्रसन्नता हुई, जितनी किसी सिनेमा घर के मालिक को 'हाउस फुल' की तख्ती देख कर भी नहीं होती होगी । मैं तुरन्त उन्हें अपने क्वार्टर पर ले आया । घर के नए सदस्यों से परिचित करवाया । घर वालों ने दिल खोल कर उनका सत्कार किया । चाय-पानी के बाद मैं भी उनके साथ बाजार आया और रास्ते में अवसर पाते ही जब मैंने उनसे अपनी साली के बारे में राय पूछी तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ अपने घर का अता-पता बताते हुए मम्मा-पिता से मिलने का सुझाव दिया ।

इस जमाने में इतना सौम्य लड़का दिन में चिराग लेकर ढूंढने से भी नहीं मिल सकता । इसलिए मैं अगले ही दिन तैयार होकर उनके घर पहुंचा । घर पर उनके पिता जी मिले । उनको अपना परिचय देने के बाद जब मैंने संक्षेप में मफत लाल जी के साथ अपनी साली के सम्बन्ध की बात छेड़ी तो वह उखड़ गए । कहने लगे—'आप तो अपनी साली के हाथ पीले करना चाहते हैं, पर वह आपका मुँह काला करवा देगा ।'

मैंने उन्हें यह बताना भी उचित समझा कि लड़का-लड़की ने एक दूसरे को देख कर पसन्द कर लिया है । लेकिन वह फिर बोले—'मेरी समझ में नहीं आता है कि आपका दिमाग फिर गया है या आपको पागल कुत्ते ने काटा है जो आप अपनी पली-पलाई साली का हाथ उस निठल्ले के हाथ में थमाना चाहते हैं ?'

निठल्ला शब्द सुन कर मेरी सूझ-बूझ में बिजली का सा झटका लगा । जब रहा नहीं गया तो पूछा—'आप कैसी बातें कर रहे हैं ? सारा शहर जानता है कि वह बहुत अच्छी सर्विस करते हैं । और आप उन्हें निठल्ला कह रहे हैं ?'

'अच्छी सर्विस करते हैं तो किसी आफिस में थोड़े ही करते हैं । बालीबाल के मैचों में करते हैं । उनकी इस सर्विस की वजह से शहर उनकी कद्र करता है, पर हम तो नहीं करते । सारा दिन खेलने-कूदने के अलावा कोई काम नहीं । इधर-उधर घूमने के अलावा कोई धंधा नहीं । माता-पिता का कोई ध्यान नहीं । भविष्य की कोई चिन्ता नहीं । ऐसे लड़के का रिश्ता मांगने आप आ सकते हैं, लेकिन मैं उसके साथ किसी लड़की की जिन्दगी खराब नहीं होने दूंगा ।

यह सब सुन कर मेरे पैरों के नीचे की जमीन खिसकने लगी । वहां से जैसे-तैसे बात खत्म कर अपने क्वार्टर की तरफ चल पड़ा । क्वार्टर पर आकर जब मैंने असलियत खोली तो साली उदास होकर छत पर चली गई, सास निराश होकर बरामदे में खड़ी हो गई और पत्नी हंस कर यह कहने लगी कि इस हादसे को 'अखबार' में छपवाइए । पर मैंने लड़की की शादी होने से पहले ऐसा करना ठीक नहीं समझा । पिछली गर्मियों में नत्थू की मौसी की शादी हो चुकी है ।

सवाल यह है ?
दुनिया की आबादी बढ़ती ही चली गई तो क्या होगा ?
स २०७८ में
गाड़ियों की भीड़ से बचने के लिये मेरी गाड़ी ने लिफ्ट लेली है।
न : १९७८ में
बढ़ती आबादी ने तंग कर दिया। कितने दिनों बाद खुली जगह पर रहना नसीब हुआ है। बाग-बगीचा खुला आसमान, ठंडी ताजा हवा, ट्रैफिक की भायें-भायें से परे शांति ही शांति।
और यह सब चीजें कहां नसीब हुई हैं, जरा यह भी तो
२२७८ में। सड़कों पर चलते हुए
पिता जी अभी तो हमारे साथ थे। व भीड़ में पता नहीं कहां गये।
उन्होंने नीली कैप पहनी हुई है।
जो भी नीली कैप वाला दिखाई दे उसे पकड़ लू ?
सं २३७८ में।
जगह की कमी के कारण आदमियों ने अब पेड़ों पर रहना शुरू कर दिया है। तो अब हम कहाँ जाएं ? मेरी मानो तो अच्छा यही है कि आबादी रोकने के लिए अब हम ही अपना परिवार नियोजन शुरू कर दें !
कहिये, हर सप्ताह एक लाजवाब सवाल मिल रहा है ना आपको ?
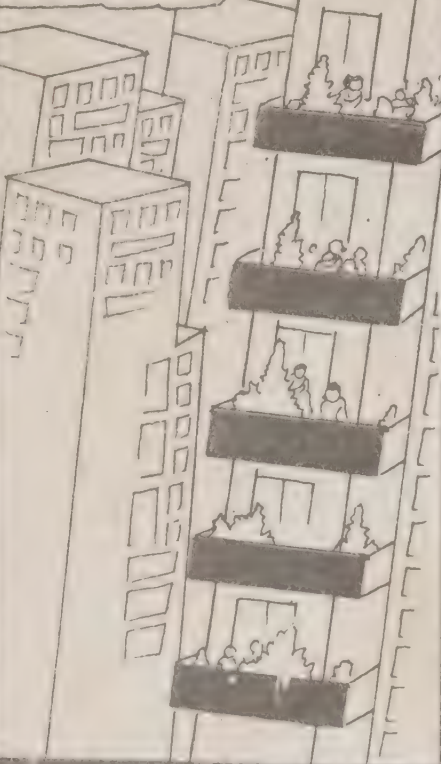
झमूरा मरता मर जाएगा, पर होस्टल की लड़कियों के नाम की माला जपना नहीं छोड़ेगा, उसे यह भ्रम है कि लड़कियों की फ्रैंडशिप के सहारे वह तरक्की की सीढ़ी चढ़ कर कहीं से कहीं पहुंच जाएगा।

मीटिंग कर रही हैं मेरी गर्लज फ्रैंड, अभी मुझे बुलाएंगी।
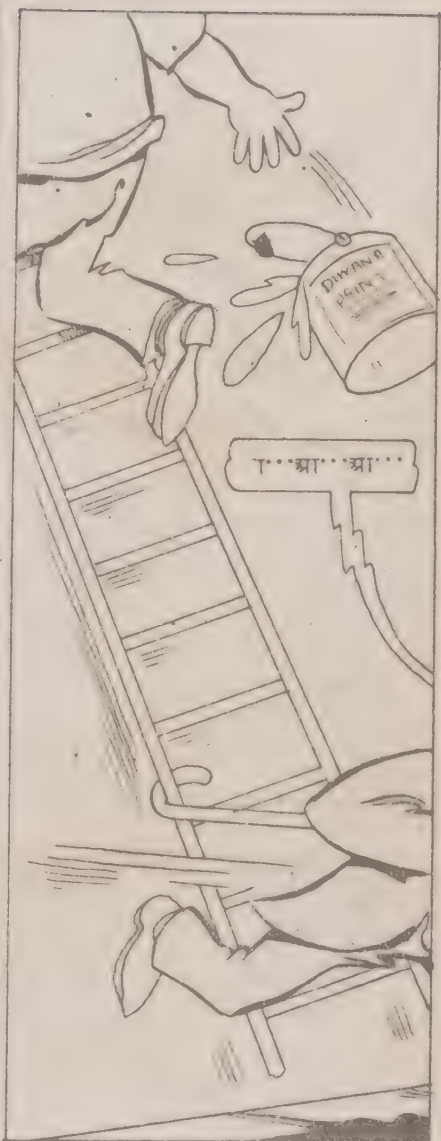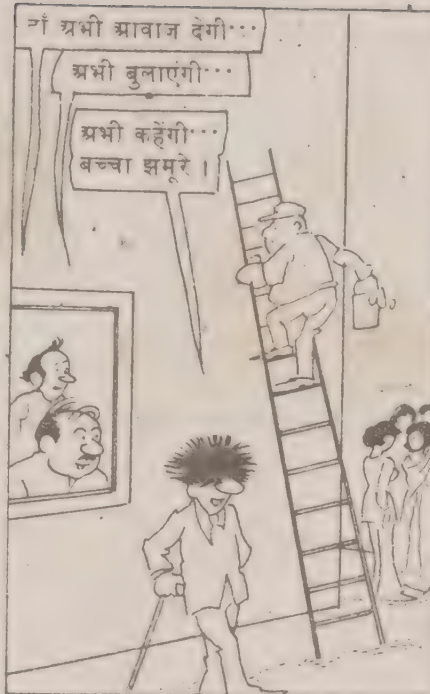
आपका आयकर

इसका परिकलन कैसे करें ?

यदि आप व्यष्टि या हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब हों तो आपको निम्नलिखित दर - तालिका से सहायता मिल सकती है

वर्ष १९७८-७९ के निर्धारण के लिए आयकर की दरें तथा वित्तीय वर्ष १९७८-७९ के दौरान संदेय अग्रिम कर की दरें.

कुल आय स्लैब	प्रत्येक व्यष्टि, हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब के लिए (कालम ३ में उल्लिखित को छोड़ कर) देय कर की रकम	ऐसे प्रत्येक हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब के लिए जिसमें कम से कम एक सदस्य ऐसा है, जिसकी कुल आय १०,००० रु. से अधिक है, संदेय कर की रकम
१	२	३
रु. रु.	स्लैब के लिए + परिवर्तनशील राशि निश्चित राशि जैसी कि निम्नांकित है.	स्लैब के लिए + परिवर्तनशील राशि निश्चित राशि जैसी कि निम्नांकित है.
१०,००० रु. तक	कुछ नहीं	कुछ नहीं
१०,००१ से १५,००० तक	८,००० रु. से अधिक पर १५ प्रतिशत *	८,००० रु. से अधिक पर १८ प्रतिशत **
१५,००१ से २०,००० तक	१,०५० + १५,००० रु. से अधिक पर १८ प्रतिशत	१,२६० + १५,००० रु. से अधिक पर २५ प्रतिशत
२०,००१ से २५,००० तक	१,९५० + २०,००० रु. से अधिक पर २५ प्रतिशत	२,५१० + २०,००० रु. से अधिक पर ३० प्रतिशत
२५,००१ से ३०,००० तक	३,२०० + २५,००० रु. से अधिक पर ३० प्रतिशत	४,०१० + २५,००० रु. से अधिक पर ४० प्रतिशत
३०,००१ से ५०,०००	४,७०० + ३०,००० रु से अधिक पर ४० प्रतिशत	६,०१० + ३०,००० रु. से अधिक पर ५० प्रतिशत
५०,००१ से ७०,०००	१२,७०० + ५०,००० रु. से अधिक पर ५० प्रतिशत	१६,०१० + ५०,००० रु. से अधिक पर ५५ प्रतिशत
७०,००१ से १,००,०००	२२,७०० + ७०,००० रु से अधिक पर ५५ प्रतिशत	२७,०१० + ७०,००० रु. से अधिक पर ६० प्रतिशत
१,००,००१ और अधिक	३९,२०० + १,००,००० रु. से अधिक पर ६० प्रतिशत	

अधिभार : उपर्युक्त दरों पर संदेय आयकर के अतिरिक्त आयकर का १५ प्रतिशत के बराबर की रकम अधिभार के रूप में संदेय है.

* किन्तु यदि किसी मामले में जहां कुल आय १०,५४० रु. से अधिक नहीं है, तो संदेय आयकर १०,००० रु से ऊपर की कुल आय का ७० प्रतिशत के बराबर की राशि आयकर के रूप में संदेय होगी.

** किन्तु यदि किसी मामले में जहां कुल आय १०,६९० रु. से अधिक नहीं है तो १०,००० रु. से अधिक की कुल आय का ७० प्रतिशत आयकर के रूप में संदेय होगा.

करों का सही-सही हिसाब लगायें-तुरन्त अदा करें

निरीक्षण निदेशक
(गवेषणा, सांख्यिकी और प्रकाशन) आयकर विभाग
नयी दिल्ली-११०००१
द्वारा जारी किया गया.

डी ए वी पी ७८/२८२

अंक ४८ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

इ[1]	ज	रा	य[2]	ल
दी			श	पा
अ[3]	स	म		
मीं[4]	सा		ह[5]	ल
न		ई[6]	मा	म

विजेता

1. अमर जीत सिंह, कृष्ण नगर, दिल्ली।
2. ओमप्रकाश, जैतो (पंजाब)।
3. मनोज आनन्द, पटियाला।
4. विवेक शर्मा, आनन्द लोक, नई दिल्ली।
5. याद सुगन्ध, रिवाड़ी।
6. विनीत कुमार कोठिया, बीना (म.प्र.)।

अगर प्रतियोगिता का परिणाम

अगर हमारे सिर पर सींगें होतीं तो......
...... तो चुनाव की जरूरत नहीं होती।

विजेता: मधुपर्णा मुखर्जी, रैलवे रोड, हापुड़

पृष्ठ १३ से आगे

'जी—मालिक ओ'''ओ'''ठाकुर साहब जो आज्ञा' ज्वाला प्रसाद अपनी खुशी को दबाने का प्रयास करते हुए हाथ जोड़कर बोले, 'मैं तो पहले ही आपका सेवक हूं।'

'और आपको एक और काम भी करना है।'

'वह क्या ?'

'अब आप एक बहुत धनी बेटे के पिता हैं इसलिए आप उस गंदे स्थान में रहें'''यह ठीक नहीं लगता—मेरी प्रार्थना और इच्छा है कि आप आज ही भाभी और बच्चियों को सामान समेत लेकर यहीं चले आईए।

'यहां ?' ज्वाला प्रसाद ने आंखें फाड़ कर कहा।

'और क्या ? इसमें हानि ही क्या है ? इतनी बड़ी कोठी है'''इसमें दर्जनों कमरे हैं जिनमें से अधिकतर खाली पड़े हैं'''आप लोग आ जाएंगे तो और रौनक हो जाएगी।'

'जो आपकी आज्ञा।'

ज्वाला प्रसाद के चेहरे पर गहरी खुशी दिखाई दे रही थी'''फिर दशरथ ने रचना की ओर देख बिना ठाकुर साहब से कहा—

'अच्छा बाबूजी'''मैं कालिज जा रहा हूं।'

'हूं'''हां'''बेटे, जाओ'''जाओ।'

दशरथ कमरे से निकल गया। रचना उस दरवाजे की ओर देखती रह गई जिससे दशरथ गया था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे दशरथ के साथ ही उसका दिल भी खिंचता चला गया हो।

☐ राकेश ने कलाई की घड़ी देखी और फिर फाटक की ओर देखकर बड़बड़ाया—

'वह कहां गया ? अभी तक नहीं आया ?'

अब तक तो आ जाना चाहिए था।' रानी ने कहा।

'कहीं ऐसा तो नहीं कि उसे तुम्हारा संदेश ही न मिला हो।'

'असम्भव—संदेश अवश्य मिल गया होगा।'

'फिर यह भी सम्भव है कि वह अपनी पत्नी की जुल्फों ही में उलझा हुआ हो।'

'असम्भव'''बिल्कुल'''असम्भव।'

'क्यों सुना है रचना तुमसे भी अधिक सुन्दर है।'

'होगी'''' रानी लापरवाही से बोली, लेकिन मैंने दशरथ के गिर्द जो प्यार का जाल बुना है वह इतना तगड़ा और दृढ़ है कि दशरथ फड़फड़ा कर उसमें दम तोड़ सकता है लेकिन उस जाल से निकल नहीं सकता।'

'देखते हैं—बस यह समझ लो कि अगर दशरथ हाथ से निकल गया तो करोड़ों की हानि हो जाएगी।'

'तुम देखते तो रहो।'

एकाएक राकेश चौंककर खड़ा होता हुआ बोला—

'वह आ रहा है दशरथ।'

'आ रहा है''' रानी उछलकर बोली, 'मैं न कहती थी कि वह जरूर आएगा।'

'अरे'''जल्दी-जल्दी शोक की दशा बनाओ अपनी।'

'मैं तो बना लूंगी—तुम भाग जाओ यहां से'''अगर उसने तुम्हें देख लिया तो सारी स्कीम मिट्टी में मिल जाएगी।'

राकेश दौड़कर एक कुंज में चला गया रानी ने जल्दी से पर्स खोलकर उसमें से ग्लेसरीन की शीशी निकाली और थोड़ी ग्लेसरीन आंखों में लगा कर शीशी पर्स में रख ली'''फिर जल्दी-जल्दी होंठों से लिपस्टिक साफ की'''बालों को बिखराया और पेड़ के तने पर एक हाथ टेक कर खड़ी हो गई और दशरथ के पास पहुंचने की प्रतीक्षा करने लगी—

थोड़ी देर बाद दशरथ के कदमों की आहटें उसके कानों से टकराईं और उसके पास पहुंच कर रुक गईं। रानी यूं ही खड़ी रही। कुछ क्षण बाद दशरथ की आवाज उसके कानों से टकराई—

'रानी'''!'

रानी कुछ न बोली'''चुपचाप पीठ किए खड़ी रही'''दशरथ ने फिर कहा—

'रानी ! मुझसे रुष्ट हो क्या ?'

रानी ने एक हल्की-सी सिसकी ली''' दशरथ धीरे-धीरे पास आया'''उसने रानी के कंधे पर हाथ रखा और भर्राई हुई आवाज में बोला—

'रानी'''!!'

सहसा रानी मुड़ी और दशरथ के कंधे से लग कर सिसकियां भरती हुई बोली—

'यह क्या हो गया दशरथ ?'

'रानी''' दशरथ भारी आवाज में बोला, 'भगवान् जानता है कि जो कुछ हुआ है'''इसमें मेरा कोई दोष नहीं।'

'दोष तुम्हारा नहीं मेरे भाग्य का है।'

'नहीं रानी'''भगवान् के लिए ऐसे न कहो।'

'मुझे लगता है शायद मेरे प्या[र में]
अभाव रह गया है।'

'नहीं रानी'''नहीं'''मुझे तुम्[हारे प्यार]
पर पूरा-पूरा विश्वास है—और मैं
अपने दिल की गहराइयों से प्यार
रानी'''मेरा तुम्हारा जन्म-जन्मातरों
है।'

'तो फिर हमारे बीच रचना
कैसे बन गई ?'

'वह मेरी बहुत बड़ी मजबूरी थ[ी]
मेरा विश्वास करो'''रचना से मुझे
पड़े तो केवल अपनी बहनों के भ[ी]
लिए'''उनका जीवन बर्बाद होने से
लिए'''लेकिन भगवान् जानता है
एक-एक क्षण केवल तुम्हारी याद
हैं'''रचना के मेरे साथ फेरे हुए हैं'''
साथ सुहाग कक्ष में भी रहा हूं लेकिन
जानता है कि हम दोनों एक-दूसरे
पत्नी होते हुए भी एक-दूसरे के लिए
हैं।'

'दशरथ'''!!'

'मैं सच कहता हूं रानी'''मेरे
उसे पत्नी स्वीकार नहीं किया।'

'मगर वह'''वह'''।'

'मुझे उस पर तरस भी आता है
उसने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा'''परि[स्थितियों]
ने उसे मेरी पत्नी बना दिया लेकिन
हुए भी उसे एक पत्नी का प्यार
सका।'

'दशरथ'''दशरथ'''।' रानी द[शरथ से]
चिपटती हुई बोली, 'तुम मेरे हो—तु[म]
मेरे हो।'

'हां रानी'''मैं तुम्हारा हूं
तुम्हारा'''तुम मेरी हो'''केवल मेरी'

'किन्तु'''किन्तु'''फिर इस प्र[कार]
तक एक-दूसरे से मिलेंगे ?'

'मैं क्या करूं रानी—मेरी कु[छ समझ]
में नहीं आता।'

'सुनो दशरथ'''फिर क्यों न [किसी]
मन्दिर में शादी कर लें ?'

'शादी !!' दशरथ ने आश्चर्य [से कहा]
'क्या तुम यह सब कुछ जान कर भ[ी]
शादी कर लोगी ?'

'मैं तुम्हारे बिना जी नहीं स[कती]
दशरथ—मैं तुम्हारे बिना जी नहीं स[कती]'

'मगर'''मगर'''शादी के होते [हुए]
हम एक-दूसरे के साथ रह सकेंगे ?'

...ही, पिप्ले वार्ड नं० ... नेपाल, १५ वर्ष, ..., दीवाना पढ़ना, ...लना, फोटोग्राफी ... करना।

गुलशन अरोड़ा, १२२४, पक्की गली, बाड़ा हिन्दूराव, दिल्ली-११०००६, २० वर्ष, फरमाइश भेजना, बड़ों का आदर करना, गाने गाना।

विनय कुमार बड्ढा, नसरवान का बाड़ा, गजानन टाकीज के पीछे, कटनी (म० प्र०) १७ वर्ष, पत्र-मित्रता एवं फिल्में देखना, सैर करना।

बाबूराम चान्दगोठिया, ६१, जवाहर मार्केट, धान मंडी, श्री गंगानगर, २४ वर्ष, दोस्ती करना, फोटोग्राफी करना, सैर करना।

अनिल कुमार द्वारा गजानन राव केलकर सैन्ट्रल एक्साइज इन्स्पेक्टर, अमर, २० वर्ष, पिक्चर देखना, शूटिंग करना, गाना, पढ़ाई करना।

सतीश कुमार वर्मा द्वारा श्री एस. सरण, मार्केटिंग आफिसर, रमना रोड, मुजफ्फरपुर, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, पढ़ना।

गुर बख्श सिंह, गुरु नानक वार्ड, कटनी, १७ वर्ष, बन्दूक चलाना, कुत्ते पालना, पत्रिका पढ़ना, बड़ों की आज्ञा का पालन करना।

...र शर्मा, ४४३/७, ...मोहल्ला, अजमेर, १८ ... नीतियों से लड़ना, ... सीखना, घूमना, ...ना।

नरेश नामदेव 'आनन्दक' दीप-शिखा साहित्य केन्द्र, गांधी चौक, कोतमा, (म० प्र०) १९ वर्ष, पेंन्टिंग, लोगों की भलाई कर बैर मोल लेना।

तीरथ सिंह मासूम, कैनाल कालोनी, गीदड़बाहा, जिला फरीदकोट, म० नं० ३०/५, २१ वर्ष, ऊंची बातें सोचना, पत्र-मित्रता करना।

प्रकाश रत्नाकर बाडकर, शोभा सदन, फ्लैट नं० ८, ब्लाक नं० २ जवाहर नगर, गोरेगांव मुंबई-६२, २६ वर्ष, स्टेशन पर सवारी देखना।

ओम प्रकाश शर्मा, चूनगरान मोहल्ला बीकानेर, २२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, हंसना-हंसाना व पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह करना।

सतीश मदान, म० नं० ४६० फैज बाजार सोनीपत, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह करना, घूमना-फिरना।

राजेश एच. कापरवाला ३/६३३ नवापुरा, करवारोड, सूरत (गुजरात) ३६ वर्ष, तैरना, शायरी, पिक्चर देखना, बड़ों की सेवा करना।

..., ३/५ महेश नगर, ...७ वर्ष, पत्र-मित्रता ... फरमाइश भेजना, ...लना, फोटोग्राफी ...क्चर देखना।

भूषण कुमार जैन, पुराना बाजार, कैराना, जि० मु० नगर, १८ वर्ष, सबको तंग करना और फिर खुश होकर नाचना, गाने गाना।

दिनेश तिवारी 'अमित' ४६, बैंक कालोनी, अन्नपूर्णा रोड, इन्दौर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता, डाक टिकट संग्रह कहानी, कविता व शेर लिखना।

राकेश नारायण बिश्नोई 'चंद्र' हटरी बाजार भाटापारा, जि० रायपुर (म० प्र०) १८ वर्ष, साहित्य में रूचि संस्थाओं में सचिव बनना।

राकेश देवकानी, पी. एन. ७६४, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर, १८ वर्ष, फिल्म देखना, गाना गाना, शायरी करना, सैर करना।

नरेश महाराणा, चम्पा नगर, चमक साह लेन, भागलपुर, (बिहार) १५ वर्ष, इलेक्ट्रिक मास्टर एवं बिजली के हर प्रकार के सामान देना।

आनन्द भूषण सिन्हा, राजकीय ...स डीपू के पश्चिम, छपरा, (बिहार) १४ वर्ष, लड़कियों से बातें करना, पायलट बनना, हाकी खेलना।

...न सिंह ... नं० १०, ... बिहार, ... ना, सैर ... वा करना

...न्द्र शर्मा, फारेस्ट रेस्ट ... १७ राणा प्रताप मार्ग, ... (यू० पी०) १७ वर्ष, ...टबाल खेलना, अच्छी पुस्तक ...ढ़ना, नावल पढ़ना।

सज्जन राज जैन 'सुनीता' जालोरी गेट के अन्दर, प्रेमजी की पोल श्याम भवन के सामने, जोधपुर, १५ वर्ष, रचनायें लिखना, पत्र-मित्रता।

राम निवास गोयल, श्री राम करण, नानक चंद, रोहतक रोड, जींद, १८ वर्ष, मैगजीन पढ़ना, फिल्में देखना, सिक्के इकट्ठे करना।

देवी प्रसाद गोस्वामी, माजरा, देहरादून, हिन्दी विद्या भवन, २३ वर्ष, दीवाना प्रत्येक सप्ताह पढ़ना, इसे पढ़ कर ज्ञान मिलता है।

विनोद कुमार ग्रोवर, पंचायती मंदिर के नीचे, गढ़ मुक्तेश्वर, जिला गाजियाबाद, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पिक्चर देखना, सैर करना।

उमेश कुमार अग्रवाल, १/२४६ खालसा गली, आगरा, २१ वर्ष, नावल पढ़ना, बच्चों से प्यार करना, राजनीतिक भाषण सुनना।

...र बरियानी, ...र, होस्पीटल रोड ...८२००३, १९ वर्ष ...ढ़ना, मित्रता, पत्र-...रना।

बसंत कुमार शर्मा, द्वारा डी. एल. शर्मा, अतिरिक्त तहसीलदार, बरसिया, (म. प्र.) १२ वर्ष, लड़ना, दीवाना पढ़ना, सैर करना।

राज कुमार कालरा, एल. ३०, हकीकत नगर, सहारनपुर, (यू. पी.) १५ वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना, सैर करना, गाने गाना।

मदन राम आहूजा, लाल निवास, ६ डी, प्रहलाद नगर, मेरठ शहर-२, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, प्यार करना, घूमना, रेडियो सुनना।

अशोक अरोड़ा, द्वारा भूषण स्टूडियो, मामा भांजा रोड, सोनीपत (हरियाणा) १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, फोटोग्राफी करना।

...वाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर इस कॉलम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ______ शौक ______

...वा बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२१ सितम्बर से २७ सितम्बर ७८ तक

मेष : इस सप्ताह के दौरान आप कुछ विशेष कामों में सफलता प्राप्त कर सकेंगे, परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, व्यापार की स्थिति में सुधार होने पर भी धन की प्राप्ति आशा से कम या कुछ देरी से ही मिलेगी।

वृष : आर्थिक दृष्टिकोण से इस सप्ताह को अच्छा कहा जाएगा, परन्तु घरेलू एवं व्यापारिक योजनाओं पर व्यय काफी होगा, राजदरबार से भय या परेशानी, मित्रों से सहयोग मिलेगा।

मिथुन : यह सप्ताह भी तकरीबन पहले जैसा ही रहेगा, व्यय यथार्थ होते हुए भी आर्थिक कठिनाई महसूस होती रहेगी, काफी संघर्ष करने के बाद कुछ कामों में सफलता मिल सकेगी।

कर्क : इन दिनों कुछ महत्वपूर्ण परन्तु अस्थाई परिवर्तन आ सकते हैं जिससे कामकाज में सुधार होता जावेगा, आय-व्यय समान ही, घरेलू हालात से परेशानी फिर भी सुख अच्छा मिलेगा।

सिंह : इस सप्ताह के दौरान शुभ-अशुभ मिश्रितफल प्राप्त होते रहेंगे, परिश्रम करने पर भी सफलता आशा से कम या कुछ देरी से मिलेगी, कारोबार ठीक चलेगा, यात्रा अचानक हो सकती है।

कन्या : जल्दबाजी या क्रोध में किया गया काम हानिप्रद रहेगा, इसलिए प्रत्येक काम सोच विचार कर ही करें तो अच्छा रहेगा, बड़े लोगों का परामर्श लाभप्रद सिद्ध होगा, कोई अप्रिय घटना हो सकती है।

तुला : यह सप्ताह संघर्षमय होने के साथ-साथ दिलचस्प भी रहेगा, कामकाज में व्यस्तता बढ़ जाने से शारीरिक थकावट या कमजोरी का प्रभाव भी रहेगा, दिलचस्प कार्यक्रम बनेंगे।

वृश्चिक : इस सप्ताह को विशेष अच्छा नहीं कहा जा सकता, अपरिचित लोगों से बचें वरना हानि हो सकती है, भाग्य साथ देगा और आप किसी भारी संकट से बच निकलेंगे, व्यय अधिक होगा।

धनु : इन दिनों संघर्षमय परिस्थितियों में से गुजरना पड़ेगा, किसी-किसी समय बेचैनी काफी रहेगी, फिर भी यह सप्ताह अच्छा रहेगा, कठिनाइयाँ धीरे-धीरे दूर होती जावेंगी, व्यापार में लाभ होगा।

मकर : इस सप्ताह भी उलझनें पहले समान ही बनी रहेंगी, काम पूरे तो होते रहेंगे परन्तु बनेंगे कुछ देरी से, आय-व्यय यथार्थ, किसी प्रियजन से मिलाप होगा, कारोबार ठीक चलेगा।

कुम्भ : स्वास्थ्य में अचानक ही बिगाड़ पड़ सकता है, सावधानी आवश्यक है, वरना चोट भी लग सकती है, कारोबार में उन्नति एवं सुधार की भी नई-नई योजनाएं बनेंगी, परिवार से सुख मिलेगा।

मीन : सप्ताह पहले से कुछ अच्छा रहेगा, कामकाज में समय अधिक व्यतीत होगा और लाभ भी अच्छा होने लगेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय काफी होगा, कोई काम किसी विशेष कारणवश अधूरा रह जायेगा।

'मैं नकल से ज्यादा अक्ल में विश्वास रखती हूँ'।

—विजय भारद्वाज

बिन्दिया गोस्वामी का जन्म छः जनवरी को बम्बई में हुआ। इन्होंने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है। हेमा मालिनी की मम्मी श्रीमती जयाचक्रवर्ती के आग्रह पर यह फिल्म उद्योग में आईं। एक नजर में देखने पर बिन्दिया गोस्वामी हेमा मालिनी की कार्बन कापी लगती है। इनकी प्रथम फिल्म थी 'जीवन ज्योति'! लेकिन बिन्दिया जिस फिल्म से चर्चित हुईं वह थी 'मुक्ति'। फिल्म 'मुक्ति' में बिन्दिया ने विद्या सिन्हा के समान्तर भूमिका निभाई थी जो सर्वचर्चित रही। उसके बाद असरानी निर्देशित 'चला मुरारी हीरो बनने' में यह नायिका के रूप में आईं। यह फिल्म भी दर्शकों द्वारा पसन्द की गयी लेकिन फिल्म आलोचकों ने खुले आम बिन्दिया के बारे में घोषणा कर दी कि यह हेमा की तरह प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर पायेगी।

फिल्म 'कालेज गर्ल' में सचिन के साथ बिन्दिया गोस्वामी ही जोड़ीदार थीं। यह फिल्म भी एक वर्ग विशेष द्वारा सराही गई।

बिन्दिया गोस्वामी नवोदित अभिनेत्रियों में से हैं। अभिनय प्रतिमा के क्षेत्र में इन्होंने अभी बहुत कुछ सीखना है! फिल्म 'खट्टा-मीठा' में भी इनका अभिनय सराहनीय रहा! इनकी आने वाली प्रमुख फिल्में हैं 'आत्माराम' और 'दुनियादारी'।

बिन्दिया वास्तव में खूबसूरत और आकर्षक हैं इसमें कोई दो राय नहीं! देखने में बिल्कुल हेमा मालिनी की बहन लगती हैं। रूप, यौवन और मादकता लिये बिन्दिया जब पर्दे पर दिखायी देती हैं तो दर्शक दि... थाम कर रह जाते हैं। 'दीवाना साप्ताहि... के लिए एक विशेष भेंटवार्ता में मैंने बिन्दि... के विचार जानने चाहे।

'आप फिल्मों में कैसी रोल पस... करती है रोमांटिक या सामाजिक?'

'मुझे हर तरह के रोल स्वीकार है... मैं किसी विशेष रोल के लिए प्रसिद्ध हो... नहीं चाहती। मैं एक आर्टिस्ट हूं औ... आर्टिस्ट को चाहिए कि हर चरित्र के अ... कूल अपने आपको ढाल ले। मैं वैसे ... फिल्मों में विभिन्न रोल स्वीकार कर र... हूं ताकि मुझे हर चरित्र चित्रण में अभिन... प्रदर्शन का अवसर मिले?' बिन्दिया... अपने दांत के नीचे उंगली का दबा हु... नाखून छोड़ते हुए कहा।

'हेमा से आपकी शक्ल काफी मिल... है। क्या इससे आ... कोई फायदा उठा... है या नहीं?'

'मैं नयेपन ... विश्वास रखती हूं... हेमा-हेमा ही है और ... या-बिन्दिया ही... मैंने कभी हेमा की एक्टिंग की नकल क... की नहीं सोची। ... हेमा मालिनी की ... हूं। मैं फिल्म उद्योग में अपना स्थान अप... मेहनत और लगन से बनाऊंगी, हेमा ... नकल से नहीं।' बिन्दिया ने गम्भीर ... में जवाब दिया।

बिन्दिया गोस्वामी की रुचि है गप... लड़ाना और खाना पकाना। सैर सपाटे औ... ड्राइविंग में भी रुचि है।

६, कासा विला, खार पाली रो...
बम्बई-४०००५२